



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1  
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 357]  
No. 357]

नई दिल्ली, बुध्दिवार, नवम्बर 29, 2007/अग्रहायण 8, 1929  
NEW DELHI, THURSDAY, NOVEMBER 29, 2007/AGRAHAYANA 8, 1929

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 28 नवम्बर, 2007

अंतिम जांच परिणाम

विषय : चीन जन. गण. के अथवा वहाँ से निर्यातित फ्लैट बेस स्टील व्हील्स के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच ।

सं. 14/8/2005-डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण के लिए) नियमावली, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियमावली कहा गया है) :

2. जबकि मै. कल्याणी लैमर्ज लि., पुणे और व्हील्स इंडिया लि., चेन्नई (जिन्हें एतदपश्चात् आवेदक कहा गया है) द्वारा इसके अंतर्गत बनाए गए अधिनियम और नियमों के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष प्रस्तुत आवेदन के आधार पर दिनांक 31 मई, 2006 को भारत के राजपत्र असाधारण में एक सार्वजनिक सूचना जारी की गई थी जिसमें चीन जन. गण. (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित फ्लैट बेस स्टील व्हील्स (जिन्हें एतदपश्चात् संबद्ध उत्पाद/वस्तु कहा गया है) के कथित पाटन की पाटनरोधी जांच की शुरुआत की गई थी ।

3. प्राधिकारी ने दिनांक 12 जनवरी, 2007 को जारी अधिसूचना द्वारा अपने प्रारंभिक जांच परिणामों और दिनांक 21 फरवरी, 2007 और 12 मार्च, 2007 को किए गए संशोधनों को अधिसूचित किया था जिसमें संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयात पर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की गई थी और प्राधिकारी की सिफारिशों पर कार्य करते हुए राजस्व विभाग ने दिनांक 29 मार्च, 2007 को अपनी अधिसूचना सं. 51/2007-सीमाशुल्क द्वारा संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क लगाया था ।

## क. प्रक्रिया

4. प्राधिकारी के प्रारंभिक जाँच परिणामों को अधिसूचित करने वाली सार्वजनिक सूचना के जारी होने के बाद इस जाँच के संबंध में नीचे वर्णित प्रक्रिया का पालन किया गया है।

(i) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तु के प्रतिवादी निर्यातकों, आयातकों और प्रयोक्ताओं, भारत स्थित संबद्ध देश के दूतावास और घरेलू उद्योग समेत सभी हितबद्ध पक्षकारों को दिनांक 12 जनवरी, 2007 के प्रारंभिक जाँच परिणामों की प्रतियाँ भेजी थी और प्रारंभिक जाँच परिणामों पर हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियाँ आमंत्रित की थीं। इस जाँच से संबंधित पक्षकारों को प्रारंभिक जाँच परिणामों की अधिसूचना के 40 दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया गया था।

(ii) प्रारंभिक जाँच परिणामों के उत्तर में हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियों को रिकार्ड में रखा गया है और प्राधिकारी ने इस प्रकटन विवरण में इनमें उठाए गए मुद्दों की जाँच की है।

(iii) प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के अगोपनीय अंश को हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण हेतु सार्वजनिक फाइल के रूप में खुला रखा।

(iv) उत्पादन की ईष्टतम लागत और भारत में संबद्ध वस्तु को बनाने और बेचने की लागत को सामान्यतः स्वीकृत लेखांकन सिद्धांतों (जी ए ए पी) के अनुसार याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर ज्ञात किया गया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।

(v) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों को उनके विचार प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करने के लिए दिनांक 14.02.2007 को सार्वजनिक सुनवाई का आयोजन किया था। सार्वजनिक सुनवाई के दौरान पक्षकारों द्वारा किए गए मौखिक अनुरोधों जिन्हें लिखित रूप में पुनः प्रस्तुत किया गया, को इस जाँच के प्रयोजनार्थ रिकार्ड में रखा गया है।

(vi) विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उनके द्वारा प्रस्तुत आँकड़ों के संबंध में किए गए गोपनीयता के दावों की जाँच की गई है। वह सूचना जो अपनी प्रकृति से गोपनीय है या जिसे हितबद्ध पक्षकार द्वारा उसके अगोपनीय सारांश के साथ गोपनीय आधार पर उपलब्ध कराया गया है, को गोपनीय माना गया है। इस जाँच परिणाम में \*\*\* चिह्न घरेलू उद्योग द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई और प्राधिकारी द्वारा गोपनीय मानी गई सूचना को प्रदर्शित करता है।

(vii) इस मामले के आवश्यक तथ्यों का खुलासा अक्टूबर, 2007 को गोपनीय और सामान्य प्रकटन में सभी हितबद्ध पक्षकारों के समक्ष किया गया था। प्रकटन विवरण के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियों पर प्राधिकारी द्वारा, उनके संगत और साक्ष्यों द्वारा समर्थित होने की सीमा तक उन पर विचार किया गया है।

(viii) यह जाँच 1 जनवरी, 2005 से शुरू होकर 31 दिसम्बर, 2005 (जाँच अवधि) तक की अवधि में की गई थी।

(ix) संक्षिप्तता को ध्यान में रखते हुए, हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियों और प्रारंभिक जाँच परिणामों से पहले उठाए गए और उनमें निपटाए गए मुद्दों को इन जाँच परिणाम में दोहराया नहीं गया है।

#### ख. विचाराधीन उत्पाद एवं समान वस्तु

5. जैसाकि प्रारंभिक जाँच परिणाम में दर्ज है, वर्तमान जाँच में शामिल उत्पाद 16" से 20" के नोमिनल व्यास आकार के फ्लैट बेस स्टील व्हील्स है जिसका प्रयोग वाणिज्यिक वाहनों में ट्यूब टायर अनुप्रयोगों में किया जाता है। पहिया रिम और डिमाउंटेबल रिंग के साथ डिस्क का एक संयोजन होता है जो वाहनों के एक्सलों पर लगा होता है और वाहनों के चलने के लिए टायरों के साथ फिट किया जाता है। हल्के, मध्यम और भारी वाहनों के रूप में वर्गीकृत वाणिज्यिक वाहनों में बसें, ट्रकों, ट्रेलरों और टेम्पों समेत लारियाँ शामिल हैं। पहियों को सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम और आई टी सी एच एस वर्गीकरण के अध्याय 87 में शीर्ष 8708.70 के अंतर्गत परिभाषित किया गया है। तथापि सीमाशुल्क वर्गीकरण मात्र सांकेतिक है और वर्तमान जाँच के कार्यक्षेत्र पर किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं है। इस संबंध में किसी हितबद्ध पक्षकार ने कोई मुद्दा नहीं उठाया है।

6. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु और संबद्ध देश से आयातित संबद्ध उत्पाद में कोई अंतर नहीं है। इस उत्पाद का आयात उपभोक्ताओं द्वारा सीधे किया जा रहा है जो घरेलू और आयातित उत्पाद को एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग करते हैं। ये दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देश से आयातित उत्पाद सभी आवश्यक विशेषताओं की दृष्टि से एक समान है और इसलिए नियमावली के अंतर्गत परिभाषा के अर्थ के भीतर समान वस्तुएं हैं। इस संबंध में किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा कोई मुद्दा नहीं उठाया गया है।

#### ग. घरेलू उद्योग की स्थिति

7. यह याचिका मै0 कल्याणी लैमर्ज लि0 और व्हील्स इंडिया लि0 द्वारा संयुक्त रूप से दायर की गई है। संबद्ध वस्तुओं के मात्र दो घरेलू उत्पाद याचिकाकर्ता हैं और 100 प्रतिशत घरेलू उत्पादम उन्हीं का है। अतः याचिकाकर्ता वर्तमान याचिका दायर करने की स्थिति में है और निग्रहों के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग हैं। किसी हितबद्ध पक्षकार ने इस संबंध में कोई मुद्दा नहीं उठाया है।

#### हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दे

##### घ.1 गोपनीयता

8. मामले के विभिन्न पहलुओं से संबंधित टिप्पणियों के अलावा घरेलू उद्योग और चीन जन गण के भागीदार निर्यातक ने दूसरे पक्षकार द्वारा दावा की गई अत्यधिक गोपनीयता का मुद्दा उठाया है। घरेलू उद्योग का तर्क है कि (क) निर्यातक ने अगोपनीय अंश उपलब्ध कराए बिना अनेक अनुरोध किए हैं (ख) निर्यातक ने अनेक सूचनाओं का खुलासा नहीं किया है और न ही गोपनीयता के दावे का कोई कारण बताया है (ग) न तो कानूनन और न ही तथ्य की दृष्टि से किसी कंपनी के व्यावसायिक लाइसेंस के गोपनीय होने का दावा किया जा सकता है जैसाकि निर्यातक ने किया था और (घ) निर्यातक के उत्तर के ढंग को देखते हुए निर्यातक द्वारा गलत सूचना प्रस्तुत किए जाने की संभावना से बचने के लिए उन्हें प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत की गई सूचना पर टिप्पणी यकरने की

अनुमति दी जानी चाहिए। तथापि निर्यातक ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग ने अपनी उत्पादन लागत और अन्य व्ययों तथा शुरुआती आवेदन के बाद किए गए अनुरोधों का उचित अगोपनीय अंश उपलब्ध नहीं कराया है।

9. प्राधिकारी ने भागीदारी निर्यातक द्वारा सहयोग की मात्रा और सीमा तक और प्रस्तुत सूचना को नोट किया और यह कि अगोपनीयता संबंधी मुद्दों का किए गए अनुरोधों के अगोपनीय अंश प्रस्तुत करने के द्वारा बाद में समाधान कर दिया गया है। निर्यातक द्वारा प्रस्तुत अनुरोधों को स्वीकार किया गया है, यद्यपि कुछेक दावों को स्वीकार नहीं किया गया है, परन्तु कतिपय दावों को स्वीकार नहीं करने या कतिपय सूचना को अस्वीकार किए जाने के कारण निर्यातक को असहयोगी नहीं माना जाएगा। वह सूचना, जो स्वाभाविक रूप से गोपनीय है या जिसे हितबद्ध पक्षकार द्वारा उसके अगोपनीय सारांश के साथ गोपनीय आधार पर प्रस्तुत किया गया है, उसे गोपनीय माना गया है।

## घ.2 निविष्टियों और संबंधित पहलुओं के संबंध में

### (क) इस्पात की कीमतें

10. प्रारंभिक जाँच परिणामों के बाद अपनी टिप्पणियों में घरेलू उद्योग ने आरोप लगाया है कि चीन की इस्पात कीमतें अंतर्राष्ट्रीय कीमतों से कम थी और चूँकि निर्यातक ने कम कीमत के लाभ को स्वीकार किया था, इसलिए बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा नहीं दिया जा सका था क्योंकि प्रमुख निविष्टियों की कीमतें उनके बाजार मूल्य को पूर्णतः प्रदर्शित नहीं करती थी। निर्यातक ने यह कहते हुए इस अनुरोध का खण्डन किया है कि कानून में यह व्यवस्था नहीं थी कि निर्यातक देश में प्रचलित कीमतें अंतर्राष्ट्रीय कीमतों से अधिक होनी चाहिए और इन पर इस बात पर विचार किए बिना विचार किया जाना चाहिए कि क्या वे अंतर्राष्ट्रीय कीमतों की तर्ज पर।

### (ख) इस्पात पर सब्सिडियाँ

11. घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि चीनी सरकार इस्पात उद्योग को नकद और भूमि प्रदान करके, गैर वाणिज्यिक नियमों पर स्वामित्व के अधिकारों पर अंतरण, इक्विटी परिवर्तन और ऋण माफी, अकार्यशील ऋण पर कार्रवाई नहीं करना, अधिमानी ऋण प्रदान करके, छूटों समेत निर्देशित ऋण तथा कर प्रोत्साहन, लक्षित अवसंरचना विकास, कच्ची सामग्री की कीमतों, चीनी रेनमिन्बी (आर एम बी) मूल्य में कमोबेश करके, कोयले, धात्विक कोक, बिजली आदि निविष्टियों पर सब्सिडी देकर इस्पात उद्योग की सहायता करती है। अतः चीन में इस्पात की कीमतें उस देश के किसी प्राकृतिक लाभ के परिणामस्वरूप नहीं बल्कि इस्पात को सस्ता करने के लिए सरकार द्वारा उद्योग में तदर्थ हस्तक्षेप का परिणाम था सबिडी की ऐसी तदर्थ प्रणालियाँ जो संक्टर/उद्योग/उत्पाद/क्षेत्र-विशिष्ट नहीं थी और जिनमें उचित ढंग से उल्लिखित उद्देश्यपूर्ण पात्रता मापदण्ड के प्रकार के राज्य के हस्तक्षेप का अभाव था और इनमें प्रतिसंतुलनकारी शुल्क संबंधी जाँच में अपने को प्रस्तुत नहीं करता है। इस प्रकार चीनी फर्मों के आर्थिक निर्णय बाजार संकेतकों के प्रत्युत्तर में नहीं लिए जाते थे और इनमें राज्य का भारी हस्तक्षेप शामिल था। इसके अलावा, अमेरिका ने चीन की इस्पात सब्सिडियों के विरुद्ध डब्ल्यू टी ओ के निर्देशों की मांग की है।

12. निर्यातक ने इन तर्कों को यह कहते हुए अस्वीकार किया है कि घरेलू उद्योग के अनुरोधों में दम नहीं है क्योंकि उन्होंने स्टील उद्योग को दी गई कथित सब्सिडी के संबंध में साक्ष्य प्रस्तुत नहीं

किए थे । इसके अलावा, चीन में बिजली की कीमतें बाजार अर्थव्यवस्था वाले अनेक देशों में प्रचलित कीमतों के तुलनीय हैं । तदर्थ सब्सिडियाँ, स्वाभाविक रूप से उद्योगों/उद्योगों के लिए विशिष्ट होंगी और इनकी उपलब्धता प्रतिबंधित होगी ताकि ये प्रतिसंतुलन योग्य हों" इसके अलावा, सब्सिडी से कोई अर्थव्यवस्था गैर-बाजार अर्थव्यवस्था नहीं हो जाती क्योंकि सभी देश इन्हें देते हैं । घरेलू उद्योग सब्सिडियों के आधार पर प्रतिसंतुलनकारी शुल्कों की लेवी के लिए एक पृथक याचिका दायर कर सकता है ।

### घ.3 निर्यातक द्वारा दिए गए विरोधाभासी उत्तर

#### (क) उत्पादन प्रक्रिया के संबंध में

13. घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि निर्यातक ने उत्पादन प्रक्रिया के बारे में काफी असमंजस की स्थिति उत्पन्न कर दी है जैसाकि नीचे दर्शाया गया है

मुद्दा	विरोधाभासी दावे
लगाई गई उत्पादन प्रक्रिया	<ul style="list-style-type: none"> <li>➤ संबंधित उत्पाद, डिस्क, रिम और रिंग का संयोजन है ।</li> <li>➤ डिस्क के उत्पादन के लिए सामग्रियाँ इस्पात क्वाइन, रिम के लिए इस्पात और रिंग के लिए इस्पात का रिंग</li> <li>➤ अपेक्षित कच्ची सामग्रियाँ इस्पात क्वाइल, रिंग का इस्पात और रिम का इस्पात है ।</li> </ul>

शुरूआत में विनिर्माण प्रक्रिया को डिस्क, रिम और रिंग का संयोजन बताया गया था जैसाकि उत्पादन लागत के विवरण से सिद्ध होता है । कच्ची सामग्री और इस्पात लागत का 93 प्रतिशत हिस्सा था जैसा केवल तभी हो सकता है यदि उत्पादन प्रक्रिया एक संयोजन संबंधी प्रचालन था । इसके अलावा कंपनी ने पहले यह दावा किया था कि डिस्क के उत्पादन की सामग्री इस्पात की क्वाइन है जबकि बाद में यह दावा किया कि प्रयुक्त कच्ची सामग्री एच आर क्वाइल थी । इसके अलावा, यद्यपि निर्यातक ने पहले यह दावा किया था कि वह सभी निविष्टियाँ खरीद रहा था तथापि उन्होंने बाद में उल्लेख किया कि क्वाइन और क्वाइल दोनों कच्ची सामग्रियाँ थे । घरेलू उद्योग ने यह माना है कि क्वाइन और क्वाइल दो अलग-अलग उत्पाद हैं, क्वाइन डिस्क उत्पादन की मध्यवर्ती स्थिति है । इसके उत्तर में निर्यातक ने कहा है कि जैसाकि प्राधिकारी द्वारा स्पष्ट किया गया है अनुवाद संबंधी कतिपय त्रुटियों के कारण निविष्टियों को क्वाइन, रिम और रिंग का इस्पात के रूप में दर्शाया गया है जबकि इसे क्वाइन, रिम और रिंग के लिए इस्पात होना चाहिए । किसी भी स्थिति में उन्होंने ब्यौरेवार उत्पादन प्रक्रिया चार्ट उपलब्ध कराया है जो यह दर्शाते हैं कि क्वाइन, रिम और रिंग्स का उनके द्वारा विनिर्माण किया जाता है और न कि उन्हें खरीदा जाता है ।

#### (ख) अपशिष्ट के संबंध में

14. घरेलू उद्योग ने यह बताया है कि निर्यातक ने घरेलू उद्योग पर अधिक अपशिष्ट का आरोप लगाया गया है परन्तु वास्तव में, निर्यातक ने खपत किए गए स्टील की वास्तविक मात्रा नहीं बताई है और उसने उत्पाद भार आधार पर संबद्ध उत्पाद और अन्य उत्पादों के बीच लागत की आनुपातिकता का उपयोग करके खपत को कम बताया है । शुरूआत में निर्यातक ने कहा था कि वे मानक लागत समीक्षा तैयार नहीं करते हैं लेकिन बाद में उन्होंने उस अपशिष्ट की जानकारी दी थी, जो कंपनी की प्रणाली से नहीं निकल सकता है और इसलिए यह अविश्वसनीय था । घरेलू उद्योग

ने यह आरोप लगाया है कि स्टील क्वाइन के स्तर से क्वाइल उत्पादन के स्तर पर अपशिष्ट की मात्रा पूर्णतः भिन्न-भिन्न है और अपेक्षाकृत कम है। इसके अलावा, कंपनी की निवेश संबंधी योजनाओं से सिद्ध होता है कि क्वाइन बनाने के लिए अपेक्षित प्रैस को बढ़ाने का कोई प्रयास नहीं किया गया था। इस प्रकार कंपनी स्टील क्वाइल के स्तर से नहीं बल्कि स्टील क्वाइन के स्तर से उत्पादन शुरू कर रही थी जो अपशिष्ट के कारण और इसके उत्पादन में शामिल परिवर्तन लागतों के कारण अपेक्षाकृत महंगा होता।

(ग) संबद्ध कंपनियों के बारे में

15. घरेलू उद्योग ने निर्यातक द्वारा किए गए विरोधाभासों को निम्नानुसार रेखांकित किया है:

मुद्दे	विरोधाभासी दावे
संबद्ध कंपनियां	<ul style="list-style-type: none"> <li>➤ कंपनी समूह की कंपनी है</li> <li>➤ कृपया संलग्नक 2 देखें, समूह की सभी कंपनियों की सूची</li> <li>➤ कंपनी किसी अन्य सत्ता के साझे नियंत्रण में नहीं है।</li> <li>➤ कंपनी की अनेक संबंधित/अधीनस्थ कंपनियाँ हैं, कुछ विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन/बिक्री में शामिल हैं</li> </ul>

और यह बताया है कि निर्यातक के उत्तर में अनेक संबद्ध कंपनियों की मौजूदगी स्पष्ट रूप से दर्शाई गई है, जिनमें से कुछ संबद्ध उत्पाद के उत्पादन और बिक्री में शामिल हैं। सभी संबंधित कंपनियों को प्रश्नावली का उत्तर देना अपेक्षित था। निर्यातक ने तर्क दिया है कि एक ओर घरेलू उद्योग ने दावा किया कि संबद्ध वस्तुएं आफ-द-सेल्फ उपलब्ध नहीं थी और दूसरी ओर यह कि संबंधित कंपनी को प्रश्नावली का उत्तर देना चाहिए जबकि केवल एक कंपनी ने भारतीय आयातक के विनिर्देशनों, उत्पादन और गुणवत्ता नियंत्रण संबंधी अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए उत्पाद का विकास किया है। इस प्रकार अन्य कंपनियों, चाहें वे संबद्ध हों, में उत्पादित सामग्री की आपूर्ति करने का प्रश्न नहीं उठता था। इसके अलावा ये कंपनियाँ काफी दूर-दूर स्थित थीं।

घ.4 रूपांतरण की प्रक्रिया

16. घरेलू उद्योग ने आरोप लगाया है कि सामूहिक स्वामित्व से निजी स्वामित्व में कंपनी के परिवर्तन पारदर्शी नहीं था, यह कि परिवर्तन के समय तीनों मालिकों के बीच कोई समझौता नहीं हुआ, यह कि निर्यातक ने यह खुलासा नहीं किया है कि कंपनी हाल के समय तक निजी स्वामित्व वाली नहीं थी। इस नाम "झांगजू झेंजिंग व्हील फैक्टरी" से संकेत मिलता है कि यह एक पूर्णतः राज्य के स्वामित्व वाला उद्यम थी। तीन मालिकों वाली कोई कंपनी सामूहिक स्वामित्व वाली नहीं हो सकती है और निर्यातक के उत्तर पर विश्वास नहीं किया जा सकता है। इसके अलावा कंपनी की विधिक पहचान संबंधी विरोधाभासों के मुद्दा निम्नानुसार है:-

मुद्दा	विरोधाभासी दावे
कंपनी की विधिक पहचान	<ul style="list-style-type: none"> <li>➤ इस कंपनी के 3/5 मालिक हैं।</li> <li>➤ यह कंपनी पहले "सामूहिक स्वामित्व" वाली थी और अब यह एक निजी विधिक सत्ता है।</li> </ul>

निर्यातक ने स्वामित्व में किसी सूचना को छुपाए जाने से इनकार किया है।

## घ.5 क्षमता विस्तार

17. घरेलू उद्योग ने टाटा मोटर्स लि० (जिसे एतदपश्चात् टी एम एल कहा गया है) ने क्षमता स्थापना संबंधी पाटन की धमकी भरे आइडलिंग का सहारा लिया है, द्वारा पूर्व में दिए गए संकेत के आधार पर संबद्ध उत्पाद सहित व्हील उत्पादन की अपनी क्षमता में बढ़ोतरी कर लेने का दावा किया है। टी एम एल ने यह कहते हुए इसका खंडन किया है कि घरेलू उत्पादकों को दिए गए आर्डरों का आकार उनके साथ विचार-विमर्श की गई संकेतात्मक मात्राओं से कभी भी कम नहीं रहा था और इसलिए यह कथन तथ्यात्मक रूप से गलत था।

## ड. पाटन एवं पाटन मार्जिन का निर्धारण

### ड.1 बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार (एम ई टी)

18. प्राधिकारी ने अपने प्रारंभिक जांच परिणामों में नोट किया था कि विगत तीन वर्षों में यूरोपीय संघ, संयुक्त राज्य अमरीका और भारत जैसे डब्ल्यू टी ओ सदस्यों द्वारा की गई पाटनरोधी जांचों में चीन जन गण को एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश का व्यवहार दिया गया है। अतः पाटनरोधी (ए डी) नियमावली के अनुबंध 1 के पैराग्राफ 8(2) के अनुसार सामान्य मूल्य के अनंतिम आकलन के प्रयोजनार्थ चीन पी आर को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश का व्यवहार दिया गया था।

19. यथासंशोधित नियमावली के अनुबंध I के पैराग्राफ 8 में यह प्रावधान है कि किसी देश के विरुद्ध गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की धारणा का अलग-अलग व्यवहार के लिए अलग-अलग निर्यातकों द्वारा खंडन किया जा सकता है यदि वे पैराग्राफ 8(3) में विनिर्दिष्ट मानदंडों के आधार पर सूचना एवं पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध कराते हैं और इसके विपरीत साबित करते हैं। चीन जन गण से संबद्ध वस्तु के सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों को एम ईटी प्रश्नावली के उत्तर में पैराग्राफ 8(3) के अनुसार आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था ताकि निम्नलिखित मानदंडों पर विचार कर सके कि क्या:-

(क) कच्चे माल, प्रौद्योगिकी की लागत एवं श्रम, उत्पादन, बिक्रियां और निवेश सहित कीमतों, लागतों एवं निविष्टियों के संबंध में चीन जन गण में संबंधित फर्मों के निर्णय पूर्ति एवं मांग को दर्शाने वाले बाजार संकेतकों के उत्तर में तथा इस संबंध में सरकार के किसी खास हस्तक्षेप के बगैर और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत वास्तविक रूप से बाजार मूल्यों को दर्शाती है, पर विचार करके लिए जाते हैं;

(ख) ऐसी फर्मों की उत्पादन लागत एवं वित्तीय स्थिति पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली से आगे लम्बी गई विशेष रूप से परिसंपत्तियों के मूल्यह्रास, अन्य बट्टे खाते, वस्तु विनिमय व्यापार और कर्ज की क्षतिपूर्ति के द्वारा भुगतान के संदर्भ में विकृतियों के अध्यधीन होती है;

(ग) ऐसी फर्मों दिवालियापन और संपत्ति कानूनों के अध्यधीन होती है जो फर्मों के प्रचालन के लिए विधिक निश्चितता और स्थायित्व की गारंटी प्रदान करते हैं; और

(घ) विनिमय दर परिवर्तन बाजार दर पर किए जाते हैं ।

20. चीन में संबद्ध वस्तु के केवल एक विनिर्माता अर्थात् मै0 झेंगक्सिंग ग्रुप व्हील्स कंपनी लि0 (जेड जी डब्ल्यू सी एल) ने बाजार अर्थव्यवस्था दर्जे एवं अलग व्यवहार का दावा करते हुए प्रश्नावली उत्तर और बाजार अर्थव्यवस्था प्रश्नावली का उत्तर दाखिल किया था ।

## ड.2 हितबद्ध पक्षकारों के एम ई टी के संबंध में विचार

21. घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि इस धारणा का खंडन कि चीन पी आर एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था देश था और यह साबित करके बाजार अर्थव्यवस्था दर्जे (एम ई एस) का दावा कर रहा था कि अलग-अलग उत्पादक/निर्यातक नियमों के अंतर्गत विनिर्दिष्ट मानदंडों को पूरा करते हैं, "साक्ष्य एवं सूचना" के आधार पर होना चाहिए न कि केवल खाली कथनों के आधार पर । इस बात का भार निर्यातक पर ही था कि कंपनी एम ई एस की हकदार थी । इसके अलावा, चीन द्वारा डब्ल्यू टी ओ के समक्ष हस्ताक्षर की गई शामिल होने संबंधी संधि के अनुसार समग्र रूप से उद्योग ही एम ई एस का दावा कर सकता था न कि अलग-अलग फर्म/मौजूदा कानूनी प्रावधानों में यह अन्तर्निहित है कि एम ई एस के दावे पर तभी विचार किया जा सकता यदि इसे उन उत्पादकों द्वारा किया गया था जो उद्योग के प्रतिनिधि थे । अतः प्रतिवादी चीनी उत्पादक को एम ई एस व्यवहार प्रदान नहीं किया जा सकता था । यह साबित करने के लिए कि निर्यातक बाजार अर्थव्यवस्था माहौल में प्रचालन कर रहा था, सभी संगत एवं आवश्यक सूचनाएं दी जानी थीं जैसा कि नीचे दिया गया है ।

22. **कंपनी का विधिक रूप :** घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि निर्यातक ने बताया है कि कंपनी का स्वामित्व सारे समय तीन व्यक्तियों के पास था और यह कई बार "सामूहिक स्वामित्व" की कंपनी थी । निर्यातक को बाजारी शक्तियों का पारस्परिक प्रभाव और उनके आर्थिक निर्णयों में सरकार के हस्तक्षेप का अभाव/नगण्य हस्तक्षेप साबित करना होता है । विगत के स्वामित्व और सामूहिक स्वामित्व का उद्यम कैसे एक निजी सत्ता बन गया, के बारे में अपर्याप्त और भ्रामक सूचनाएं दी गई हैं । उचित प्रकटन के अभाव में यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है कि परिवर्तन की प्रक्रिया के दौरान राज्य के स्वामित्व के शेयरों को मुक्त रूप से बाजार कीमत पर बेचा गया है । परिसंपत्ति मूल्य-निर्धारण रिपोर्ट इस प्रक्रिया में केवल एक शुरूआती दस्तावेज था । परिवर्तन की प्रक्रिया की उपयुक्तता की भी जांच की जानी थी, क्या कंपनी को किसी हितबद्ध पक्षकार को उपलब्ध कराया गया था, अथवा स्वामित्व को विनिर्दिष्ट व्यक्तियों को सेंपने का निर्णय लिया गया था और उसके बाद मूल्य निर्धारण किया गया था । ऐसा मूल्य-निर्धारण विश्वसनीय नहीं होगा यदि इसे बाजार में पेश नहीं किया गया था ।

23. घरेलू उद्योग ने यह भी बताया है कि अत्यधिक छोटी और बहुत कम पूंजी वाली कंपनी से इसका 10 वर्षों के दौरान चीन में सबसे बड़े व्हील उत्पादकों में से एक उत्पादक और सहायक कंपनियों में किए गए आर एम बी 110 मिलियन से अधिक के बड़े निवेश वाली कंपनी के रूप में परिवर्तन जब इसकी आय आर एम बी 10 मिलियन से कम थी, सरकारी सहायता का प्रमाण था । इसके अलावा, लगाई गई पूंजी को बढ़ाकर आर एम बी 90 मिलियन किया गया था जिसमें 85 प्रतिशत अंशदान एक अकेले व्यक्ति का था जिसने वर्ष 2004 में लाभ पर विचार करते हुए 53 वर्षों



के लाभ का प्रतिनिधित्व किया था। इसलिए इन निधियों के स्रोत की जांच अवश्यक की जानी चाहिए।

24. निर्यातक ने सूचना दबाने के आरोप से इनकार किया है। प्राधिकारी को यह सूचना दे दी गई थी कि कंपनी को मूल रूप से एसोसिएशन द्वारा प्रायोजित किया गया था लेकिन इसमें तीन निजी व्यक्तियों ने निवेश किया था। कंपनी के निगमीकरण के समय प्रवर्तकों ने एसोसिएशन की प्रायोजकता की यह महसूस करते हुए मांग की थी कि संगठन का सामूहिक रूप श्रमिकों और अन्य को सामाजिक रूप से सामाजिक रूप से अधिक स्वीकार्य था। लेकिन चूंकि एसोसिएशन निधियां निवेश नहीं कर रही थी इसलिए प्रवर्तकों द्वारा निवेश की जाने वाली निधियों और उनकी भूमिका के संबंध में एक करार किया गया था। निवेशकों ने इसके निजी बन जाने के बाद पर्याप्त अतिरिक्त क्षमता में बढ़ोतरी की थी। परिवर्तन से पूर्व कंपनी की पूंजी एवं परिसंपत्ति आधार नगण्य था जैसाकि परिवर्तन के समय वित्तीय विवरणों और परिसंपत्ति मूल्य निर्धारण रिपोर्टों से देखा गया है। यदि वे पूर्ववर्ती दर्जे से लाभान्वित भी हुए होते तो कंपनी की वर्तमान पूंजी और परिसंपत्ति आधार पर विचार करते हुए आगे ले जाने संबंधी प्रभाव नगण्य होते। इसके अलावा, डब्ल्यू टी ओ कानून में यह अपेक्षित नहीं था राज्य स्वामित्व से परिवर्तन इसे आम जनता को पेशकश करके ही किया जाना चाहिए न कि विनिर्दिष्ट व्यक्तियों को। किसी भी स्थिति में शुरुआत से ही कंपनी प्रवर्तक के पास थी और केवल प्रायोजक के साथ उनका संबंध समाप्त किया गया था। जहाँ तक निधियों के स्रोत का संबंध है प्राधिकारी आवश्यक सीमा तक इसकी जांच कर सकते हैं।

25. **5 प्रतिशत से अधिक शेयर धारिता** - घरेलू उद्योग ने मांग की है कि निर्यातक को कंपनियों के संबंध में सूचना देनी चाहिए जहाँ उनके पास प्रत्यक्ष/परोक्ष रूप से 5 प्रतिशत से अधिक शेयर धारिता थी, कंपनी के बकाया वोटिंग स्टॉक के 5 प्रतिशत या इसके अधिक के साथ शेयरधारक और इस बात का खुलासा करना चाहिए कि क्या संबद्ध वस्तु के विनिर्माण की शक्ति के साथ कंपनी साझे नियंत्रण में थी या इसने अन्य कानूनी सत्ताएं और अन्य कंपनी के साथ संबद्धता को नियंत्रित किया था। इसके अलावा, सरकार का हस्तक्षेप "सरकार द्वारा वास्तविक हस्तक्षेप के तथ्य" तक सीमित नहीं था लेकिन यदि राज्य कानूनी रूप से और प्रचालनात्मक रूप से "कंपनी पर नियंत्रण या निर्देशन करने की स्थिति में नहीं था"। निर्यातक ने एक तरफ यह स्वीकार करके की उसकी अनेक सहायक कंपनियां हैं और दूसरी ओर यह मान कर कि कंपनी अन्य सत्ता के साथ साझे नियंत्रण में नहीं थी, परस्पर विरोधी बयान दिए हैं।

26. निर्यातक ने अपने उत्तर में परस्पर विरोधी होनी की बात से इनकार किया है। झेंगक्सिंग समूह की मूल/धारक कंपनी थी और उन्होंने इस समूह की सभी कंपनियों की सूची एवं उनके संबंध में जानकारी उपलब्ध करायी थी। पूल कंपनी के रूप में झेंगक्सिंग किसी अन्य कंपनी के नियंत्रण को नियंत्रित किया था। संबद्ध कंपनियों को सीमाशुल्क कानून के अंतर्गत परिभाषित करने के मानदंडों का पाटनरोध में कोई अनुप्रयोग नहीं था।

27. **शेयरधारकों की पहचान** - घरेलू उद्योग ने यह माना है कि प्रत्येक शेयर धारक अर्थात् व्यक्ति/कंपनी, राष्ट्रीयता, विधि, प्रचालनात्मक एवं संगठनात्मक ढांचा, स्वामित्व की पद्धति एवं शेयर

धारक जिन्होंने कंपनी को सामूहिक स्वामित्व की बनाया था, आदि संबंधी सूचना अत्यावश्यक थी। निर्यातक ने दावा किया है कि शेयरधारकों की पहचापन पहले ही उपलब्ध करा दी गई है।

28. **संबद्धता संबंधी अनुच्छेद (ए ओ ए) :** घरेलू उद्योग ने यह आरोप लगाया है कि निर्यातक ने इसे उपलब्ध नहीं कराया है जिससे अगोपनीय रूप के संबंध में व्यापार नोटिस का उल्लंघन हुआ है। निर्यातक ने दावा किया है कि संबद्धता संबंधी अनुच्छेद एक सार्वजनिक दस्तावेज नहीं था और गोपनीय या जो सारांश के लायक नहीं था।

29. **चीनी में लागू कानून -** घरेलू उद्योग ने यह माना है कि याचिका में ऐसी सूचना के लिए अनुरोध करने के बावजूद प्रश्नावली के उत्तर में इन कानूनों संबंधी कोई सूचना नहीं थी अथवा निर्यातक ने कानूनों का पालन किया है। निर्यातक ने बताया है कि उन्होंने पहले ही सूचना दे दी थी। कानूनों की जांच करने का उद्देश्य यह आकलन करना था कि उन्होंने चीन में उद्यमों को बगैर किसी अनुचित सरकारी हस्तक्षेप के उचित मात्रा में प्रचालनात्मक स्वतंत्रता निरंतरता और स्थिरता प्रदान की थी और यह जांच करना कि क्या निर्यातक ने कानून का अनुपालन किया था, अनावश्यक था। इसके अलावा निर्यातक प्रश्नावली में प्रांतीय कानूनों के बारे में सूचना नहीं मांगी गई थी जिनमें से कोई भी पाटनरोधी जांच के लिए प्रासंगिक कंपनी के गठन एवं प्रशासन से संबंधित क्षेत्रों से संबंधित नहीं था।

30. **कच्चा माल एवं अन्य निविष्टियां -** घरेलू उद्योग ने बताया है कि निर्यातक को यह प्रदर्शित करना पड़ता है कि निविष्टियों की भुगतान की गई कीमतें अंतर्राष्ट्रीय बाजार में यथा प्रचलित बाजार मूल्य को प्रदर्शित करती हैं और यह खुलासा करना पड़ता है कि क्या बाजार आपूर्तिकर्ता की पहचान, उनका विधिक एवं प्रचालनात्मक दर्जे, विद्युत का स्रोत और इसके लिए भुगतान की गई दर और विद्युत कंपनियों के ब्यौरे के उत्तर में निविष्टियां प्राप्त करने की स्वतंत्रता थी (बगैर हस्तक्षेप)। निर्यातक ने यह कहते हुए इस मांग का विरोध किया है कि यह तर्क कि "बाजार संकेतकों के उत्तर में" पर विचार किया जाना था क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रचलित कीमतें न कि चीन में प्रचलित कीमतें स्पष्ट पाठ के पहचान पहले ही सार्वजनिक कर दी गई थी, कि बिजली की वास्तविक अर्थव्यवस्था देशों में प्रचलित कीमत से कम नहीं थी, और अंततः कि बिजली कंपनियों के ब्यौरे संबंधी अपेक्षा अनावश्यक थी।

31. **औद्योगिक संपत्ति अधिकार एवं विधिक अपेक्षाएं -** घरेलू उद्योग ने कहा है कि निर्यातक को आर एंड डी उत्पादन, लाइसेंसिंग, करारों आदि, घरेलू उत्पादन एवं बिक्री निर्यातों, निबंधनों शर्तों एवं दायित्वों के लिए अपेक्षित अनुमोदन के संबंध में अन्य कंपनियों/प्राधिकरणों/सरकारों के साथ किसी भी प्रकार के उत्पाद संबंधी संविदात्मक संबंधों की अवश्य सूचना देनी चाहिए। निर्यातक ने इस बात से इनकार किया है कि उत्पाद का उत्पादन/बिक्री/निर्यात के लिए किसी सरकारी प्राधिकरण से किसी अनुमोदन की जरूरत थी और यह बताया है कि सभी निर्णय सरकार के किसी हस्तक्षेप के बगैर लिए गए थे।

32. लाभ के वितरण पर दिवालियापन एवं सम्पत्ति कानून, निवेश की गई पूंजी का प्रत्यावर्तन, श्रम नीतियाँ : घरेलू उद्योग द्वारा इन सबकी मांग किए जाने के संबंध में निर्यातक ने बताया है कि वह पहले ही संगत सूचना दे चुके हैं ।

33. घरेलू उद्योग ने बताया है कि उत्पादन, घरेलू एवं निर्यात बिक्रियां, कीमतों जो राज्य-प्रभावित नहीं है या राज्य के स्वामित्व/उसके द्वारा नियंत्रित उद्यमों द्वारा निर्धारित नहीं है, को निर्धारित करने में स्वतंत्रता पर प्रतिबंधों का सभी चीनी स्टील व्हील उत्पादकों की पूरी सूची और स्वामित्व, क्षमता, उत्पादन, घरेलू एवं निर्यात बिक्रियां संबंधी ब्यौरे के साथ उल्लेख किया जाना चाहिए । निर्यातक ने बताया है कि कीमत निर्धारण में सरकार के हस्तक्षेप को साबित करने के लिए अन्य उत्पादकों का ब्यौरा एक असंभव मांग थी क्योंकि किसी भी निर्यातक के पास देश के सभी अन्य उत्पादकों के बारे में सूचना नहीं थी । घरेलू उद्योग ने यह भी तर्क दिया है कि ओ ई एम ग्राहक इन कीमतों की मांग करेंगे और उनको सभी आपूर्तिकर्ताओं की कीमतें समान बैंड में होगी ताकि आपूर्तिकर्ता अपने आप कीमत निर्धारित करने में सक्षम न हो सके । इस कथन को निर्यातक ने मेरिट के अभाव वाला मानकर खारिज कर दिया है क्योंकि जब कोई आपूर्तिकर्ता अपने ग्राहकों की कीमत संबंधी मांग को पूरा करता है तो यह बाजार संकेतकों के उत्तर में होती है और इस कदम को गैर-बाजार नहीं माना जा सकता है तथा किसी ओ ई एम को भिन्न-भिन्न आपूर्तिकर्ताओं की कीमतें या भिन्न-भिन्न ओ ई एम एस को एक आपूर्तिकर्ता द्वारा समान उत्पाद की कीमतें तथा सरकारी एवं गैर-सरकारी नियंत्रण ओ ई एम एस की कार्रवाई भिन्न-भिन्न हो सकती है । चूंकि बड़ी मात्रा के ग्राहकों के पासस कीमत निर्धारित करने में सौदाकारी शक्ति थी, इसलिए यह नहीं माना जा सकता था कि आपूर्तिकर्ता की कीमतें बाजारी स्थितियों की सूचक नहीं थी क्योंकि केवल इस कारण के लिए कीमतों को ऐसा माना जाना चाहिए ।

34. लेखों संबंधी सूचना - घरेलू उद्योग ने मांग की है कि निर्यातक को वित्तीय विवरणों की प्रतियां उपलब्ध करानी चाहिए, यह खुलासा करना चाहिए कि क्या इनकी लेखा परीक्षा की गई थी और क्या जी ए ए पी और आई ए एस के अनुसार लेखों की सांविधिक पुस्तकें बनाई गई थीं, लेखांकन नियमों का पालन किया गया था, परिसंपत्तियों का मूल्य निर्धारण और क्या लेखा पुस्तिकाओं में प्रदर्शित किया गया था, बकाया ऋणों, उनके विशेष निबंधन एवं शर्तें, निवेश के स्रोत: क्या पूंजीवर्धन/ऋणों, बैंकों की वित्त पोषण नीतियों, ऋण के आवेदनों, पुनर्भुगतान की शर्तें एवं वारंवारिक पुनर्भुगतान का खुलासा किया जाना चाहिए । निर्यातक ने बताया है कि उन्होंने चीन के जी ए ए पी के अनुसार अपने वार्षिक लेखा परीक्षित लेखों और निवेशों का पूर्ण ब्यौरा प्रस्तुत किया था । केवल इस तथ्य से सरकारी सहायता का संकेत नहीं मिलता है कि हाल के वर्षों में भारी निवेश किया गया है और अतः सरकार के हस्तक्षेप से इनकार किया जाता है ।

35. घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि चीनी जी ए ए पी अंतर्राष्ट्रीय जी ए ए पी (आई ए एस) से भिन्न थे और आई ए एस के अंतर्गत खुलासा किए जाने के लिए अपेक्षित सूचना की चीनी जी ए ए पी के अंतर्गत मांग नहीं की गई थी । उसके बाद भी चीनी कंपनियों की वार्षिक रिपोर्ट पूरी तरह जी ए ए पी के अनुरूप नहीं थी निर्यातक ने दावा किया कि उनकी वार्षिक रिपोर्टें पूर्ण रूप से चीनी जी ए ए पी के अनुरूप थीं और घरेलू उद्योग ने यह नहीं दिखाया है कि दोनों लेखांकन मानकों में कहां अंतर है ।

36. **विदेशी मुद्रा - घरेलू उद्योग** ने पूछा है कि क्या निर्यातक ने चीन में प्रचलित बाजार दरों के अनुसार विनिमय दर प्राप्त की थी, व्यवसाय पर प्रभाव डालने वाले विनिमय जिनके संबंध में निर्यातक ने उत्तर दिया है कि उन्होंने चीन में अनुसरण किए जाने वाली विनिमय दर प्रणाली के संबंध में पहले ही सूचना उपलब्ध करा दी थी जो मुख्यतः बाजार संचालित है। चीनी ने आई एम एफ के अनुच्छेद VIII पर हस्ताक्षर किए थे और विनिमय दरों की किसी प्रशासनिक व्यवस्था का वचन नहीं दिया था।

37. घरेलू उद्योग ने बताया है कि यदि एक भी शर्त पूरी नहीं की जाती है तो निर्यातक को एम इ एस प्रदान नहीं किया जा सकता है जिसके संबंध में निर्यातक ने दावा किया है कि उन्होंने एन एम ई की धारणा का खंडन करने के लिए पर्याप्त सूचना एवं साक्ष्य प्रदान किया है।

38. अपनी प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात् की टिप्पणियों में निर्यातक ने दावा किया है कि प्राधिकारी ने इस आधार पर उनके बाजार अर्थव्यवस्था दावे को खारिज किया है कि कच्चे माल की कीमतें चीन में प्रचलित बाजार दरों और अंतर्राष्ट्रीय कीमत से बहुत कम थी और निर्यातक ने अभी तक यह साबित नहीं किया है कि प्रमुख निविष्टियों की कीमतें बाजार मूल्य को वास्तविक रूप से दर्शाती थी। इस संदर्भ में रिकार्ड पर कोई साक्ष्य नहीं था कि चीन और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में किस बाजार दर पर विचार किया गया था। पी ओ आई के दौरान इस्पात की खराद सात घरेलू आपूर्तिकर्ताओं से की गई थी जिनमें से एक राज्य-स्वामित्व का था और मात्रा एवं खरीद के मूल्य का ब्यौसा उपलब्ध कराया गया था। सूचित की गई वास्तविक कीमतों में जांच अवधि के दौरान चीन जन गण. में प्रचलित सही बाजार कीमतें दर्शाई गई थीं। इसके अलावा, "अंतर्राष्ट्रीय कीमतों" के रूप में उल्लिखित कीमतें एफ ओ बी या सी आई एफ के रूप में निर्दिष्ट की गई थीं और परिभाषा के तहत ये घरेलू बिक्री कीमत से अधिक होंगी और तुलना के लिए अंतर्राष्ट्रीय कीमतों में उचित समायोजन अपेक्षित थे, जो नहीं किए गए थे। अतः यह निर्धारण आधारहीन था कि उनकी खरीद कीमतें अंतर्राष्ट्रीय कीमतों से कम हैं।

39. इसके विपरीत घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि प्राधिकारी के प्रारंभिक जांच परिणाम पूर्णतः न्यायोचित हैं, क्योंकि निर्यातक ने यह सिद्ध करने के लिए कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया था कि प्रमुख निविष्टियों की कीमतों बाजार मूल्यों को उल्लेखनीय रूप से परिलक्षित करती हैं, अतः बाजार अर्थव्यवस्था दर्ज की जरूरी शर्त पूरी नहीं की गई। यद्यपि कंपनी ने इस्पात की खरीद अनेक सप्लायरों से की थी, जिनमें से अधिकांश निजी सप्लायर थे, तथापि इसका तात्पर्य यह नहीं कि सप्लायरों की कीमतें बाजार मूल्यों को परिलक्षित करती हैं। उनकी स्वयं की खरीद कीमतों को छोड़कर कोई अन्य साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया। इसके अलावा, यह बताने के लिए कि निर्यातक द्वारा इस्पात के लिए भुगतान की गई कीमतें चीन की कीमत से कम थीं, अन्य अनेक देशों में तथा चीन में स्टील व्हील्स के उत्पादकों द्वारा भुगतान की गई घरेलू कीमत के बारे में प्राधिकारी के पास सूचना उपलब्ध थी।

40. घरेलू उद्योग ने आगे यह भी निवेदन किया है कि जांच अवधि के पश्चात् इस्पात की कीमतों में 60 डॉलर पी एम टी से अधिक की वृद्धि हो गई थी, परन्तु कुल लागत में कच्चे माल का अनुपात उल्लेखनीय होने के बावजूद निर्यातक ने संबद्ध उत्पाद के लिए वही कीमत स्तर बनाए रखा, जो बाजार अर्थव्यवस्था स्थितियों में प्रचालन प्रदर्शित करता है।

### इ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

41. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों को नोट कर लिया है। प्रश्नावली के उत्तरों तथा कंपनी द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था के संबंध में दिए गए उत्तर की जांच की गई और निर्यातक के परिसर में मौके पर ही जांच तथा सत्यापन कर लिया गया।

#### इ.3.1. निर्यातक के सत्यापन से उभरी प्रमुख बातें

42. झांगझाऊ जियांगचेंग जियोक्सी आटोमोबाइल व्हील फैक्टरी को \*\*\* को "सामूहिक उद्यम" के रूप में पंजीकृत की गई थी जिसका पर्यवेक्षण शितिग शहर के इकॉनामिक यूनाइटेड एसोसिएशन द्वारा किया गया था जिसकी \*\*\* की आर एम बी की पूंजी पंजीकृत की गई थी जो \*\*\* को बढ़कर, \*\*\* आर एम बी हो गई। \*\*\* को यह एकमात्र स्वामित्व वाली बन गई जिसकी पंजीकृत पूंजी \*\*\* आर एम बी थी। एसोसिएशन ने उद्यम की सभी परिसम्पत्तियों और एसोसिएशन का चुकाए गए लाभ का आकलन और लेखा परीक्षा का आयोजन किया और निवेशकों द्वारा निवेशित मूलधन की उन्हें वापस किया गया। पुनर्संरचित उद्यम का स्वामित्व \*\*\* के पास था जो कि संस्थापक निवेशक हैं। \*\*\* को झांगझाऊ जियांगचेंग जियोक्सी आटोमोबाइल व्हील फैक्टरी एक संयुक्त स्टाक सहकारिता में परिवर्तित की गई जिसकी \*\*\* आर एम बी की पंजीकृत पूंजी थी। \*\*\* के व्यवसाय लाइसेंस के अनुसार यह "सीमित उत्तरदायित्व कंपनी" के रूप में पंजीकृत की गई जिसकी \*\*\* आर एम बी की पंजीकृत पूंजी थी, जिसमें समय-समय पर वृद्धि हुई और \*\*\* के दौरान यह \*\*\* आर एम बी हो गई थी।

43. यह पूछे जाने पर कि क्यों एक निजी व्यक्ति को उद्यम के सामूहिक प्रारूप में कंपनी शुरू करनी पड़ी, निर्यातक ने इस तथ्य को इसकी वजह बताया कि निजी व्यक्ति को भूमि उपयोग का अधिकार नहीं था और निवेशकों को यह प्राप्त करने के लिए एसोसिएशन के पास जाना पड़ा था। अधिकार, जो दूसरी कंपनी के पास थे निर्यातक को \*\*\* में एक करार के जरिए \*\*\* से \*\*\* तक किशतों में चुकाई गई कुल \*\*\* आर एम बी राशि पर हस्तांतरित किए गए। प्राधिकारी ने नोट किया कि हालांकि निर्यातक ने दावा किया था कि संगठन का सामूहिक प्रारूप श्रमिकों तथा अन्यो को सामाजिक रूप से ज्यादा स्वीकार्य था।

44. निर्यातक से पूछा गया था कि क्यों \*\*\* के व्यवसाय लाइसेंस में उद्यम को जॉंगझोऊ जियांगचेंग जियाओक्सी ऑटोमोबाइल व्हील फैक्टरी के रूप में दर्शाया गया था, लेकिन \*\*\* के निधि उगाही करार में “जियाओक्सी” गायब था। इसका उत्तर दिया गया था कि जॉंगझोऊ और जियांगचेंग चीन की भौगोलिक अवस्थितियों के नाम थे और निवेशकों की इन नामों का प्रयोग करने की योजना थी परंतु पंजीकरण के समय उसी स्थान पर स्थित अन्य उद्यमों से अलग दर्शाने के लिए जियाओक्सी को शामिल किया गया था, एक ऐसी प्रविष्टि जो स्वयं ही निजी स्वामित्व को दर्शाती है क्योंकि राज्य के स्वामित्व वाले उद्यम से यह अपेक्षित नहीं होगा। \*\*\* में जियाओक्सी के बदले इंगक्जिंग को रखा गया था।

45. सत्यापन से प्रदर्शित हुआ कि \*\*\* की परिसम्पत्ति मूल्यांकन रिपोर्ट के अनुसार जब (क) \*\*\* आरएमबी का वस्तु सूची का अस्पष्ट पुनर्मूल्यांकन, (ख) यह स्पष्ट किए बिना पहियों की मात्रा में वृद्धि कि वे पहिए कम्पनी के अपने थे या दूसरों से खरीदे गए थे, (ग) \*\*\* आरएमबी पर भवन का पुनर्मूल्यांकन, हालाँकि खाता बही के अनुसार कोई भवन नहीं था, (घ) खातों में \*\*\* आरएमबी के बकाया की अस्पष्ट वृद्धि के जरिए उद्यम को सामूहिक स्वामित्व से एकल स्वामित्व वाले उद्यम के रूप में पुनर्गठित किया गया था, तब \*\*\* आरएमबी से \*\*\* आरएमबी का अत्यधिक पुनर्मूल्यांकन हुआ था। निर्यातक ने माना कि वस्तु सूची के कुछ हिस्से तथा भवन को पुनर्मूल्यांकन से पूर्व लेखाबद्ध नहीं किया गया था, इस स्वीकारोक्ति से ही लेखा परीक्षित खातों की विश्वसनीयता पर संदेह होता है। यह पाया गया था कि परिसम्पत्ति के कुल मूल्य में \*\*\* आरएमबी की वृद्धि हुई जिसका वित्त पोषण \*\*\* आरएमबी की सीमा तक ऋण दाताओं के जरिए किया गया था। इसके अतिरिक्त, एकल स्वामित्व के पूंजी आधार का वित्त पोषण \*\*\* द्वारा किया गया था, जो सत्यापन के दौरान प्रकट नहीं किया गया था।

46. एकल स्वामित्व से संयुक्त स्टॉक सहकारी के रूप में परिवर्तन के एक महीने के भीतर पूंजी आधार में \*\*\* आरएमबी की कमी हुई थी और सीमित देयता वाली कम्पनी के रूप में पुनर्गठन होने पर उसमें \*\*\* आरएमबी की वृद्धि हुई थी। निर्यातक ने एकल स्वामित्व से सीमित देयता के रूप में परिवर्तन की सीधे न करके दो चरणों में किए जाने के विशेष कारण का यह कहकर अस्वीकार किया है कि एकल स्वामी के पास संगठन के रूप को चुनने का अधिकार था। सीमित देयता वाली कम्पनी के बड़े हुए पूंजी आधार में \*\*\* आरएमबी का योगदान वस्तु रूप में और \*\*\* आरएमबी का योगदान नकद में (\*\*\* की पूंजी सत्यापन रिपोर्ट के अनुसार) किया गया था। \*\*\* की पूंजी सत्यापन रिपोर्ट के अनुसार चार महीनों की छोटी सी अवधि में पंजीकृत पूंजी में \*\*\* आरएमबी की वृद्धि हुई थी जिसमें \*\*\* आरएमबी का योगदान नकद और \*\*\* आरएमबी का परिसम्पत्तियों में किया गया था। जनवरी, 2005 में \*\*\* ने \*\*\* आरएमबी की भौतिक परिसम्पत्तियों का योगदान किया जिससे कम्पनी की पंजीकृत पूंजी \*\*\* आरएमबी तक बढ़ गई।

47. इसके अलावा, \*\*\* की पूंजी सत्यापन रिपोर्ट के अनुसार \*\*\* में \*\*\* ने \*\*\* विद्यालय को कम्पनी के बैंक खाते में \*\*\* आरएमबी का भुगतान करने का कार्य सौंपा था और बाद में \*\*\* आरएमबी का भुगतान किया था जिससे पूंजी योगदान \*\*\* आरएमबी की परिसम्पत्तियों सहित \*\*\* आरएमबी हो गया था। विद्यालय के जरिए रकम के हस्तांतरण का कारण यह माना गया था कि नकद आहरण पर अधिकतम सीमाओं के कारण कम्पनियों से ऋणों को सीधे व्यक्तिगत निजी खातों में स्थानांतरित नहीं किया जा सकता था। इसके अतिरिक्त, विद्यालय का स्वामित्व भी \*\*\* के पास था।

48. सत्यापन के दौरान निधि के उस स्रोत जिससे \*\*\* ने निवेश हेतु रकम प्राप्त की थी, का सत्यापन नहीं किया जा सका। इसके बाद यह कहा गया था कि \*\*\* आरएमबी का ऋण 7% की ब्याज

दरों पर \*\*\* से \*\*\* तक के लिए लिया गया था जिसे 6 वर्षों में चुकता किया जाना था और वाणिज्यिक प्रकृति का होने के कारण ये सौदे दर्शाए नहीं गए थे क्योंकि करारों में ऋण की कोई वार्षिक पुनर्भुगतान अनुसूची प्राधिकारी को प्रस्तुत नहीं की गई थी। इसके बजाय पुनर्भुगतान की केवल निर्धारित तारीखें थीं।

49. उत्पादक/निर्यातक ने दावा किया कि संबद्ध वस्तु के निर्यात पर घरेलू बाजार में उत्पादन या बिक्री पर अथवा घरेलू या निर्यात बिक्रियों पर कोई कीमत नियंत्रण या कोई निर्यात कोटा नहीं था। कच्ची सामग्री इस्पात 'विनिर्दिष्ट व्यापार' प्रणाली के अधीन था जिसमें केवल विनिर्दिष्ट उद्यमों को ही इस्पात का आयात या निर्यात करने की अनुमति थी परंतु इस प्रणाली को जाँच अवधि के ठीक पहले समाप्त कर दिया गया था, जिसे चीन के वाणिज्य मंत्रालय द्वारा 8 दिसम्बर, 2004 को जारी सार्वजनिक नोटिस से देखा जा सकता है। इसके अलावा, कम्पनी ने कहा था कि वे मौके पर संविदाओं के जरिए स्थानीय निविष्टियाँ खरीदते थे और निर्यात बिक्रियों पर 17% वैट आय प्राप्त करते थे। बाध्यकारी सांविधिक एवं विवेकाधीन अपेक्षाओं को पूरा करने के बाद निर्यात लाभों को शेयरधारकों के बीच वितरित किया जाना था।

50. संयंत्र की यात्रा के दौरान संबद्ध उत्पाद के विनिर्माण के लिए उत्पादन प्रक्रिया को देखा गया था। इस्पात के सिक्कों के विनिर्माण के लिए एचआर कॉयलों का प्रयोग किया जाता था और 2004 के अंत से असममित मल्टी पंचिंग प्रक्रिया का प्रयोग करके इस्पात के सिक्कों को पंच किया जाता था जिसके लिए कम्पनी ने स्वयं ही एक नई शियरिंग मशीन को डिजाइन एवं विकसित किया था। स्टील रिम के विनिर्माण के लिए कम्पनी ने रिंग्स के विनिर्माण के लिए रिमों और स्लॉटेड ऐंगलों में परिवर्तन के लिए विभिन्न बिन्दुओं पर अलग-अलग मोटाई वाले स्टील प्रोफाइल खरीदे। अंततः स्टील डिस्क, रिम और रिंग को पहिए बनाने के लिए वेल्ड/असेम्बल किया गया। रिम प्रोफाइल का क्रॉस सेक्शन रेखाचित्र और डिस्क, रिम तथा रिंग की इंजीनियरिंग ड्राइंग का उत्पादन किया गया था। तत्पश्चात्, खपत मानदण्डों और अपशिष्ट को कम माना गया था।

51. कम्पनी से पूछा गया था कि क्यों नकद प्रवाह विवरण में एक वर्ष की अवधि के ऋणों के भुगतान के लिए निधि का कोई बहिर्गमन नहीं था, जिसका उन्होंने उत्तर दिया कि उन्होंने वर्ष के भीतर भुगतान योग्य ऋणों के लिए बैंक से समयावधि में विस्तार हेतु आवेदन किया था। तत्पश्चात् कम्पनी से ऋण संबंधी नीति और लघु अवधि ऋणों हेतु आवेदन एवं उसके जारी किए जाने का ब्यौरा उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था। यद्यपि इन्हें सत्यापन के दौरान प्रस्तुत नहीं किया गया था तथापि इन्हें बाद में उपलब्ध कराया गया था।

52. सत्यापन के दौरान 2003 से तथा विशेष रूप से जाँच की अवधि के दौरान कम्पनी की वर्तमान देयताओं में घातांकी वृद्धि के कारण को स्पष्ट नहीं किया जा सका। निर्यातक ने इस वृद्धि को व्यवसाय की मात्रा में वृद्धि के समानुपातिक माना और कि पिछले वर्ष की तुलना में 2005 में वर्तमान अनुपात में कमी हुई थी तथा उनके सभी कार्यकलाप वित्तीय विवरणों में पूरी तरह प्रकट किए गए थे।

53. \*\*\* में एक सहायक कम्पनी को भुगतान योग्य नोट्स के \*\*\* और प्राप्ति योग्य वर्तमान परिसम्पत्तियों के \*\*\* के ब्यौरे प्रस्तुत नहीं किए जा सके। निर्यातक ने कहा कि गलती से वार्षिक लेखों में सहायक कम्पनी को भुगतान योग्य नोट्स को वस्तु की खरीद के लिए दर्शाया गया था परंतु इस स्पष्टीकरण को लेखा परीक्षित वार्षिक खातों से मिलान नहीं हुआ।

54. सत्यापन के दौरान कम्पनी इस बात का समर्थनकारी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं कर सकी कि उनके द्वारा भुगतान की गई या चीन में विद्यमान इस्पात की वास्तविक कीमत अंतर्राष्ट्रीय कीमतों को दर्शाती थी, जो कि बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्रदान किए जाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण अपेक्षा है। बाद में, यूएन-कॉमट्रेड से अंतर्राष्ट्रीय इस्पात के ब्यौरे यह सिद्ध करने के लिए उपलब्ध कराए गए थे कि चीन की इस्पात कीमत अंतर्राष्ट्रीय कीमत के आस-पास ही थी। ये कीमते एक ही देश के आंकड़ों के आधार पर फ्लैट रोल्ड उत्पादों से संबंधित थी और 0.378 डॉ. प्रति किग्रा. से 0.77 डॉ. प्रति किग्रा. की रेंज में थी जिस कारण यह अस्वीकार्य थी।

55. उपर्युक्त को देखते हुए प्राधिकारी निष्कर्ष निकालते हैं कि पूर्ववर्ती गैर बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली के बचे अनुवर्ती प्रभावों के कारण कम्पनी की लागतें एवं कीमत अत्यधिक विकृत हो गई थी इसलिए वे इस कम्पनी के सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ विचार किए जाने हेतु पात्र नहीं थे। तदनुसार प्राधिकारी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा-7 के अनुसार इस निर्यातक के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण करते हैं।

### ३.3.2 किसी सहोदर बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश पर विचार

56. नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 में यह व्यवस्था है कि गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से होने वाले आयातों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत अथवा परिकल्पित मूल्य अथवा किसी ऐसे देश से भारत समेत अन्य देशों को किए गए निर्यात की कीमत के आधार पर किया जाएगा अथवा जहाँ यह संभव न हो वहाँ उचित लाभ मार्जिन शामिल करने के लिए विधिवत समायोजित, यदि आवश्यक हो, समान उत्पाद के लिए भारत में वास्तव में भुगतान की गयी अथवा भुगतान योग्य कीमत समेत किसी अन्य उचित आधार पर किया जाएगा। एक उचित तरीके से एक उपयुक्त बाजार अर्थव्यवस्था वाला तृतीय देश चुना जाएगा (संबंधित देश के विकास के स्तर और विद्यमान उत्पादों को ध्यान में रखते हुए) और चुनाव के समय उपलब्ध कराई गई किसी विश्वसनीय सूचना को ध्यान में रखा जाएगा। किसी अन्य बाजार अर्थव्यवस्था तृतीय देश के संबंध में ऐसे ही मामलों में यदि कोई जांच की जाती है, तो जहाँ उपयुक्त हो, समय-सीमा के भीतर इस पर भी ध्यान दिया जाएगा। जांच में शामिल पक्षकारों को बाजार अर्थव्यवस्था तृतीय देश के उपर्युक्त चुनाव के बारे में अनुचित विलम्ब के बिना सूचित किया जाएगा और उन्हें अपनी टिप्पणियाँ देने के लिए उचित समयावधि प्रदान की जाएगी।

57. जांच शुरुआत अधिसूचना में हितबद्ध पक्षकारों को यह सूचित किया गया था कि घरेलू उद्योग ने यह रुझान दिया है कि चीन में गैर बाजार अर्थव्यवस्था की स्थिति को देखते हुए सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ जर्मनी को बाजार अर्थव्यवस्था वाले उचित तीसरा देश माना जाए और जाँच अवधि के दौरान वहाँ संबद्ध वस्तु की कीमत से संबंधित साक्ष्य प्रस्तुत किए गए थे। वैकल्पिक रूप से घरेलू उद्योग ने सामान्य मूल्य का निर्धारण बिक्री, सामान्य तथा प्रशासनिक व्ययों और उचित लाभ के लिए उचित रूप से समायोजित भारत में उत्पादन लागत पर विचार करके भारत में भुगतान योग्य कीमत के रूप में किया था।

58. टीएमएल ने प्रारम्भ से ही इस आधार पर जर्मनी को बाजार अर्थव्यवस्था वाले उचित देश के रूप में चुना जाने का विरोध किया था कि इसने नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 में दिए गए ऐसे किसी निर्यातक के चुनाव के सांविधिक सिद्धांत का उल्लंघन होता है। टीएमएल ने यह कहकर भारत में उत्पादन लागत को उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत करने के वैकल्पिक विचार का भी विरोध किया कि पैरा-7



में उचित लाभ मार्जन के समान वस्तु के लिए भारत में वास्तव में भुगतान की गई या भुगतान योग्य कीमत पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करने की व्यवस्था है। किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार ने कोई टिप्पणी या प्राधिकारी को आंकड़े प्रस्तुत करने के इच्छुक सदृश्य देशों के उत्पादकों/निर्यातकों के नाम प्रस्तुत नहीं किए।

59. इसके बाद घरेलू उद्योग ने चीन के उत्पाद के साथ तुलनीयता, तुर्की के उत्पादक के सहयोग करने की इच्छा और कई जाँचों में यूरोपीय आयोग द्वारा चीन के लिए सहोदर देश के रूप में तुर्की पर विचार किए जाने का उदाहरण देते हुए वैकल्पिक बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में जर्मनी के स्थान पर तुर्की का प्रस्ताव किया। तथापि निर्यातक ने कहा कि यह तुर्की में नगण्य घरेलू बिक्री, भारतीय आयातक की अपेक्षा के अनुरूप तुर्की के उत्पाद को बनाने की कमी, प्रस्तुत किए गए अप्रत्याप्त आंकड़ों, घरेलू उद्योग के साथ संबंध और चुनिंदा आंकड़ों से परिणामों के विकृत होने की संभावना को देखते हुए यह तुलना अनुचित होगी।

60. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए सभी तर्कों को नोट करते हुए और आर्थिक विकास के विभिन्न स्तरों तथा संबंध वस्तु के विकास के स्तर को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने सहोदर बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में तुर्की के चुनाव को अस्वीकार किया और उन्होंने भारत में उत्पादन लागत के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन किया है।

### ड.3.3 सामान्य मूल्य का परिकलन

61. मामले के प्रारंभिक जाँच परिणामों को तैयार करते समय प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के बीच तुलना के प्रयोजनार्थ पहिये के आकार एवं भार का प्रयोग आवश्यक उत्पाद मापदंडों के रूप में करने को उचित माना था क्योंकि इन मापदंडों को घरेलू उद्योग और निर्यातक, दोनों द्वारा स्वीकार किया गया था। तदनुसार, कच्चे माल की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों तथा इष्टतम परिवर्तन लागतों, बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक व्ययों एवं उचित लाभ को दर्शाने के लिए उचित रूप से समायोजित भारत में उत्पादन लागत पर विचार करते हुए सामान्य मूल्य का परिकलन किया गया है।

#### ड.3.3.1 हितबद्ध पक्षकारों के विचार

62. प्रारंभिक जाँच परिणामों के बाद के अभ्यावेदनों में निर्यातक ने कहा है कि यह परिकलन गलत है क्योंकि प्राधिकारी ने कच्चे माल की लागतें निकालने के लिए भारतीय घरेलू उद्योग के खपत मापदंडों का प्रयोग किया है जबकि उन्होंने भारत को निर्यातित पहियों के विभिन्न आकारों के लिए उनकी वास्तविक खपत के ब्यौरे प्रस्तुत किए थे, जिनका प्रयोग किया जाना चाहिए था। प्रयुक्त किए गए कच्चे माल की वास्तविक मात्रा उत्पादन प्रक्रिया और विनिर्माता की कुशलता पर निर्भर थी और घरेलू उद्योग की खपत निर्यातक की खपत से बहुत अधिक थी। इसके अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय कीमतों के ब्यौरे तथा सामान्य मूल्य के निर्धारण में लिए गए लाभ मार्जन को गुप्त नहीं रखा जाना चाहिए।

63. घरेलू उद्योग ने यह कहकर प्राधिकारी के जाँच परिणामों को उचित ठहराया है कि उसने यह स्थापित नहीं किया था कि निर्यातक के खपत संबंधी मापदंड उचित रूप से परिकलित किए गए हैं क्योंकि निर्यातक ने कई परस्पर विरोधी दावे किए हैं और यहाँ तक कि आधारभूत कच्चे माल को भी सही तरह से अभिज्ञात नहीं किया गया है ताकि दावों किए गए खपत मापदंडों को स्वीकार ना किया जा सके। इसके अतिरिक्त, खपत मापदंडों में अंतर अधिक से अधिक उत्पादन प्रक्रिया के कारण हो सकता है न कि कुशलता के कारण। उन्होंने दावा किया कि घरेलू उद्योग के खपत मापदंड वास्तविकता पर आधारित थे परंतु निर्यातक के मापदंडों को कम करके बताया गया था और महत्वपूर्ण सूचना को छिपाया

गया था । इसके अलावा, कच्चे माल कि लागतों को छोड़कर संबद्ध उत्पाद के उत्पादन के लिए अनुमानित परिवर्तन लागत 300 अम. डॉ. प्रति मी.टन से कम नहीं हो सकती है ।

64. निर्यातक ने यह सिद्ध करने के लिए कि एक देश के आंकड़ों, जो 0.378 डॉ./किग्रा. से 0.677 डॉ.प्रति किग्रा. के बीच थे, के आधार पर फ्लैटरोल्ड उत्पादक से संबंधित चीन की इस्पात की कीमत अंतर्राष्ट्रीय कीमतों के आस-पास की थीं, यूएन-कॉमट्रेड से इस्पात की अंतर्राष्ट्रीय कीमत के ब्यौरे प्रदान किए थे । प्राधिकारी ने इन आंकड़ों को स्वीकार किया था क्योंकि वे आंकड़ें केवल एक देश के निर्यात व्यापार के आंकड़ों थे और प्राधिकारी ने वैकल्पिक डाटा बेस का विश्वास किया था । प्रकटन के पश्चात की अपनी टिप्पणियों में घरेलू उद्योग में उत्पाद की प्रकृति और उसकी मोटाई और ग्रेड के साथ इस्पात की कीमतों में अत्यधिक अंतर की पृष्ठभूमि पर प्राधिकारी द्वारा यूएन-कॉमट्रेड के आंकड़ों को अस्वीकार किए जाने का समर्थन किया था । तथापि निर्यातक प्राधिकारी द्वारा उक्त डाटा बेस को अस्वीकार किए जाने से सहमत नहीं था । इस स्थिति की पुनः जाँच कि गई है और प्राधिकारी ने यूएन-कॉमट्रेड डाटा बेस की पुनः जांच की तथा बाजार अर्थव्यवस्था वाले प्रमुख देशों से संबंधित निर्यात आंकड़ों (निर्यातक द्वारा प्रदान किए गए एकल देश के आंकड़ों के प्रतिकूल) एकत्र किए और उक्त डाटा बेस के आधार पर पाटन मार्जिन का पुनः परिकलन किया ।

65. इस प्रकार प्राधिकारी ने उचित लाभ मार्जिन (5% ) सहित हॉट रोल्ड स्टील प्लेट्स की अंतर्राष्ट्रीय कीमत और निर्यातक के वास्तविक खपत संबंधित मानदंड तथा परिवर्तन लागतों, घरेलू उद्योग की बिक्री, सामान्य तथा प्रशासनिक व्ययों के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन किया । प्रत्येक ग्रेड के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन किया गया है और फिर भारित औसत परिकलित सामान्य मूल्य का निर्धारण किया गया है । इस प्रकार परिकलित सामान्य मूल्य \*\*\* रूपे प्रति किग्रा. है ।

#### ड.3.4 निर्यात कीमतें

##### क) सहयोगी निर्यातक के लिए

66. निर्यातक द्वारा दर्शाई गई निर्यात कीमत को भार की संख्या के परिवर्तन के लिए उचित रूपांतर के साथ प्रत्येक ग्रेड के लिए अपनाया गया है । संबद्ध उत्पाद के लिए भारत को भारित औसत निर्यात कीमत का निर्धारण किया गया है । भाड़ा, बैंक प्रभार तथा वैट प्रतिपूर्ति जैसे समायोजनों के कारण दावा किए गए कीमत समायोजनों की अनुमति दी गई है । भारित औसत निर्यात कीमत \*\*\* अम. डॉ. प्रति मी.टन ली गई है और अंतर्देशीय भाड़े तथा बैंक प्रभार के लिए समायोजन के बाद सहयोगी निर्यातक के लिए कारखाना द्वार निर्यात कीमत \*\*\* अम. डॉ. प्रति मी. टन या \*\*\* रूपे प्रति किग्रा. बनती है ।

##### ख) अन्य के लिए

67. सहयोगी निर्यातक की न्यूनतम निर्यात कीमत को अन्य उत्पादक/निर्यातक (कों) के लिए निर्यात कीमत प्राप्त करने हेतु समायोजित किया गया है । अन्य के लिए समायोजित निर्यात कीमत \*\*\* रूपे प्रति किग्रा. बनती है ।

#### ड.3.5 पाटन मार्जिन

##### क) सहयोगी निर्यातक के लिए

68. प्राधिकारी ने ग्रेड-वार परिकलित सामान्य मूल्य के भारित औसत और उत्पादन के लिए निर्धारित निर्यात कीमतों के आधार पर कारखाना द्वार पर सामान्य मूल्य और निर्यात कीमतों के बीच तुलना करके

सहयोगी निर्यातक के लिए पाटन मार्जिन का परिकलन किया है। इस प्रकार निर्धारित भारत औसत समग्र पाटन मार्जिन अत्यधिक प्रतीत होता है।

**ख) अन्य के लिए**

69. अन्य निर्यातकों के लिए भारत औसत परिकलित सामान्य मूल्य तथा न्यूनतम निर्यात कीमत को लेकर पाटन मार्जिन का परिकलन किया गया है। इसे निम्नानुसार दर्शाया गया है :-

रूपए/किग्रा. में				
ग्रेड	6.0-16	7.0-20	7.5-20	भारत औसत
<b>इंगर्जिंग</b>				
मात्रा	***	***	***	***
परिकलित सामान्य मूल्य	***	***	***	***
निर्यात कीमत	***	***	***	***
पाटन मार्जिन	***	***	***	***
पाटन मार्जिन %	35-45%	35-45%	50-60%	50-60%
<b>अन्य</b>				
परिकलित सामान्य मूल्य				***
निर्यात कीमत				***
पाटन मार्जिन				***
पाटन मार्जिन %				70-80%

स्रोत: निर्यातक, डीजीएडी

70. निर्धारित पाटन मार्जिन अत्यधिक और न्यूनतम से अधिक है।

**च. क्षति निर्धारण**

**च.1 हितबद्ध पक्षकारों के विचार**

71. घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि पहिये जैसा कोई उत्पाद किसी वाहन के लिए सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण वस्तु है और उसके विकास और उत्पादन में 6-12 महीने का समय लगता है। इसके लिए प्रारंभिक डिजाइन, ग्राहक का अनुमोदन, तनाव विश्लेषण की जाँच, टूलिंग विकास तथा स्थानीय परीक्षण के साथ-साथ प्रमाणन प्राधिकरणों एवं ग्राहकों द्वारा परीक्षण अपेक्षित होता है। अतः आयातों के कारण व्यापार घाटे को लघु अवधि में तुरंत पूरा करना व्यवहार्य नहीं है। यद्यपि सभी उत्पादों के लिए बाजार विकास एक सतत प्रक्रिया थी परंतु निर्यात बाजार में सीमित मांग को देखते हुए संबद्ध वस्तु के लिए वैकल्पिक स्थानों की तलाश करना व्यवहार्य नहीं था। चीन के उत्पादकों द्वारा पाटन से घरेलू उद्योग के प्रयासों को क्षति पहुँची है।

72. अपने पश्च प्रकटन जांच परिणाम में, निर्यातक ने दावा किया है कि जांच परिणाम में क्षति निर्धारण काफी पेचीदा है और वस्तुनिष्ठ प्रतीत नहीं होता। जांच परिणाम क्षति के दो आधारभूत मापदण्डों से संबंधित है। पहला मापदण्ड यह था कि पिछले वर्ष 2004-05 की तुलना में जांच अवधि के दौरान आयातों में वृद्धि हुई जबकि घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्री मात्रा में गिरावट आई। निर्यातक ने दलील दी है कि जब पूर्व में भारत में पहियों का कोई आयात नहीं किया गया था तब कोई निर्यात आवश्यक रूप से घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट को प्रदर्शित करेगा। ऐसी परिस्थितियों में, बाजार हिस्से में कमी आवश्यक रूप से घरेलू उद्योग को क्षति इंगित नहीं करती है। वास्तविक बिक्री के रूप में घरेलू उद्योग ने निम्नानुसार वृद्धि दर्ज की है।

	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
घरेलू उद्योग द्वारा बिक्री	52702	70757	88560	80817
घ.उ. की बिक्री में परिवर्तन				
क) 2004-05 की तुलना में जांच अवधि के दौरान				-7743
ख) 2003-04 की तुलना में जांच अवधि के दौरान				10060

2003-04 की तुलना में घरेलू बिक्री में जांच अवधि के दौरान 10060 इकाइयों की वृद्धि हुई थी जबकि 2004-05 की तुलना में यह 7743 इकाई कम है।

73. निर्यातक द्वारा दिए गए तर्कों के बारे में घरेलू उद्योग ने यह उत्तर दिया है कि यह तथ्य कि आयात अल्पवधि में 0% से बढ़कर 18.26% हो गए, क्षति के दायरे को स्थापित करता है। यूरोपीय संघ बाजार हिस्से में 1% की भी वृद्धि को महत्वपूर्ण मानता है। भले ही भारतीय कानून में ऐसा कोई विधिक प्रावधान नहीं है। इसके अलावा, जहाँ माँग में आयातों के हिस्से में वृद्धि हुई वहीं घरेलू उद्योग की बिक्री और बाजार हिस्से में गिरावट आई और वह भी माँग में वृद्धि की स्थिति में। इसके अलावा, आर्थिक मापदण्डों का आकलन पाटित आयातों, जो प्रारंभिक रूप से जांच अवधि में शुरू हुए थे, के संदर्भ में किया जाना था। इस प्रकार सर्वोत्तम सार्थक तुलना पिछले वर्ष के साथ की जा सकती है जब कोई आयात नहीं किए गए थे। जब घरेलू बिक्री की मात्रा में 2004-05 तक वृद्धि हुई तब बढ़ती हुई माँग को देखते हुए जांच अवधि में तीव्र गिरावट - जबकि उसमें वृद्धि होनी चाहिए थी पाटित आयातों की उपस्थिति थी। किसी अन्य स्थिति में यूरोपीय आयोग का मानना है कि अन्य बातों के साथ-साथ घरेलू उद्योग हेतु क्षति की विद्यमानता को स्थापित करने के लिए पिछले वर्षों और उनके व जांच अवधि के बीच के विकास और प्रवृत्तियों को संदर्भ रूप में लिया जाता है बजाय अंतिम बिन्दु से अंतिम बिन्दु तक के विश्लेषण के।

74. क्षति का दूसरा मापदण्ड यह था कि बिक्री कीमतों में वृद्धि के बावजूद 2004-05 की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को घाटा हुआ। निर्यातक ने दलील दी है कि घरेलू उद्योग को 2002-2003 के दौरान 100 यूनिटों के घाटे की तुलना में जांच अवधि के दौरान इकाइयों का घाटा हुआ और फिर भी उन्होंने पाटित आयातों के कारण क्षति का दावा किया।

					निम्नलिखित की तुलना में परिवर्तन	
	2002-3	2003-4	2004-5	जाँच अवधि	2003-4	2004-5
उत्पादन लागत	100	101	115	126	25	11
बिक्री कीमत	100	104	120	129	25	-104
लाभ/हानि	(100)	-2	72	-45	-43	-117

तालिका से यह पता चलता है कि जहाँ 2003-04 की तुलना में जांच अवधि के दौरान 25 इकाइयों द्वारा लागतें और बिक्री कीमत में वृद्धि की गई वहीं जांच अवधि के दौरान घाटे में वृद्धि हुई। इसके अलावा 2004-05 की तुलना में जांच अवधि के दौरान लागत में 11% बिन्दुओं की वृद्धि हुई वहीं बिक्री कीमतों में 9% बिन्दुओं की वृद्धि हुई। लागत में सिर्फ 2% की वृद्धि, 117% बिन्दुओं के घाटे के रूप में हुए परिवर्तन को नहीं ला सकती। इस प्रकार, केवल संभव निष्कर्ष यह था कि लाभ/हानियों का निर्धारण करने की घरेलू उद्योग की विधि सुदृढ़ नहीं है और उन्होंने अनुचित उच्च घाटा दर्शाने के लिए जांच अवधि के दौरान अपनी विधि को बदल दिया था।

75. निर्यातक ने आगे यह दलील दी थी कि नकद प्रवाह जांच अवधि के दौरान 184 से घटकर 2003-04 में 221 हो गया था इससे यह प्रतीत हुआ कि घरेलू उद्योग ने कतिपय अंचल परिसंपत्तियों को शामिल कर लिया हो जिसका उन्होंने जांच अवधि के दौरान अवमूल्यन का दावा करने के लिए उपयोग नहीं किया था।

76. निर्यातक ने दावा किया है दोनों भारतीय उत्पादकों की कीमतें लगभग समान थीं और उनकी आर्डर बुक की स्थिति स्पष्टणीय थी इसलिए केवल इस कारण कि उन्हें एक संचयी हानि हुई थी, इसे चीन से आयातों के कारण नहीं माना जा सकता। घरेलू उद्योग ने यह उत्तर दिया है कि बिक्री मात्रा में प्रतिबिम्बित आर्डर बुक की स्थिति में गिरावट आ रही थी और इसलिए संचयी हानियाँ पाठित आयातों के कारण ज्यादा थी।

77. निर्यातक ने यह तर्क भी दिया है कि कमतर क्षमता उपयोग के साथ भी घरेलू सहमत कालक्रम के अनुसार सुपुर्दगी देने में असमर्थ था और उपभोक्ताओं को सुपुर्दकगियां करने के पहले प्रायः इंतजार करना पड़ता था। घरेलू उद्योग ने समय पर सुपुर्दगी करने में अक्षमता का खण्डन किया था और यह बताया था कि इसके उलट, संबद्ध उत्पाद जिसके लिए समुचित उत्पादन तथा उपभोक्ताओं के लिए खरीद समय-क्रम है, के मामले में उपभोक्ताओं के ही तदर्थ स्थान की और मुड और आर्डर को निरस्त किया।

78. टीएमएल न माना कि घरेलू उद्योग को क्षति की दलील गलत था क्योंकि घरेलू उद्योग की कीमत क्षतिरहित कीमत (एनआईपी) से अधिक थी। याचिकाकर्ता की लागत पर आधारित 46.65 रुपए प्रति किग्रा. था 2100 रुपए प्रति सैट का संरक्षित सामान्य मूल्य भी एनआईपी था क्योंकि इसमें उत्पादन की वास्तविक लागत जमा 5% लाभ मार्जिन को शामिल किया गया था। जांच अवधि के दौरान टीएमएल ने घरेलू उद्योग से 2327.10 रुपए की औसत कीमत, जो कि कच्चे माल के लिए आधारभूत

सीमाशुल्क हेतु समायोजित एनआईपी पर थी, पर 7.5-20 विनिर्देश के लगभग 6.6 लाख पहियों के सैटों की क्षीर की थी। क्षति की अनुपस्थिति जांच अवधि के दौरान जो आधार वर्ष 2002-2003 में 44% उच्चतर होने के कारण सूचीबद्ध लाभ से प्रेरित हुई थी तथा भलू ही वे 2004-05 की तुलना में जांच अवधि में कमतर थी फिर भी वे एनआईपी के परिप्रेक्ष्य में अभी भी पर्याप्त थी। इसके अलावा, चूँकि निवल बिक्री वसूली एनआईपी के करीब थी इसलिए घरेलू उद्योग को क्षति नहीं पहुँची थी। इसके अलावा, संरचित सामान्य मूल्य जिसने समुचित पाटन मार्जिन दर्शाया था, कम होगा यदि घरेलू उद्योग की वास्तविक लागत का सत्यापन किया जाय और सही ढंग से निर्धारित किया जाए। यह प्रतीत होता है कि उद्योग ने एनआईपी के बराबर अथवा अधिक कीमत प्राप्त की है और इस प्रकार उसे क्षति नहीं हुई है।

## च.2 प्राधिकारी द्वारा जांच

79. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के क्षति संबंधी दावों के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा व्यक्त विचारों को नोट किया है और उठाए गए मुद्दों और घरेलू उद्योग के क्षति संबंधी दावों की निम्नानुसार जांच करने की कार्यवाही की है :-

### च.2.1 क्षति की जांच

80. अनुबंध-II के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम -11 में यह प्रावधान है कि क्षति के निर्धारण में निम्न का वस्तुनिष्ठ परीक्षा अंतर्ग्रस्त होगी (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान वस्तु के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव और (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव। इसके अलावा, पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय प्राधिकारी यह विचार करेगा कि क्या निरपेक्ष रूप से अथवा उत्पादन अथवा भारत में खपत के सापेक्ष पाटित आयातों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में ..... “ निर्दिष्ट प्राधिकारी यह विचार करेंगे कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा उल्लेखनीय कीमत कटौती हुई है अथवा ऐसे आयातों का प्रभाव कीमतों को उल्लेखनीय स्तर तक अन्यथा मंद करता अथवा कीमत में वृद्धि को रोकता जो कि अन्यथा उल्लेखनीय स्तर पर पहुँच गई होती।” नियम में आगे यह प्रावधान है कि “ संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेशों पर आय या क्षमता उपयोग में वास्तविक और संभावित गिरावट; घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन के मार्जिन की मात्रा; नकद प्रवाह, मालसूची, रोजगार मजदूरी वृद्धि, पूंजीगत निवेश प्राप्त करने की क्षमता पर वास्तविक और संभाव्य नकारात्मक प्रभाव सहित उद्योग की स्थिति पर असर डालने वाले सभी प्रासंगिक आर्थिक कारकों और संकेतकों का आकलन शामिल होगा।”

81. क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर संबद्ध वस्तुओं पर पाटित आयातों की मात्रा तथा कीमत संबंधी प्रभावों और इनका कीमत और लाभप्रदता पर प्रभाव की जांच की है। क्षति की मौजूदगी तथा पाटन और क्षति, यदि कोई हो के बीच कारणात्मक संबंधों की जांच करने के लिए, क्योंकि संबद्ध देश से निर्यातों के लिए पाटन मार्जिन स्थापित हुआ है, संबद्ध देश से समूचे निर्यातों को क्षति विश्लेषण और कारणात्मक संबंध की जांच करने के लिए पाटित आयात माना गया है।

### च.2.1.1 पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव: आयात मात्रा और बाजार हिस्सा

#### क) आयात मात्रा

82. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी से यह विचार करना अपेक्षित है कि क्या निरपेक्ष रूप से अथवा उत्पादन या भारत में खपत के सापेक्ष पाटित आयातों में कोई उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

83. घरेलू उद्योग ने आईबीआईएस आंकड़ा स्रोत से संकलित आयात आंकड़े प्रस्तुत किए हैं जो यह दर्शाता है कि आयात केवल संबद्ध देश से और क्षति जांच अवधि के दूसरे अर्ध भाग के दौरान हुए हैं और यह दावा किया है कि कथित उत्पाद सीमाशुल्क वर्गीकरण 8708.7000 और 8708.9100 के अन्तर्गत आता है। डीजीसीआईएस सौदे-वार आयात आंकड़ों को जांच के लिए प्राप्त किया गया था। सोसायटी ऑफ ऑटोमोटिव मैन्यूफैक्चरर्स (एसआईएम) द्वारा प्रतिवेदित जांच अवधि में वाहनों के उत्पादन आंकड़ों पर इस कथन को आधारित करते हुए घरेलू उद्योग दावा करता है कि ये दोनों स्रोत पाटित आयातों की मात्रा को कम करके दर्शाते हैं और आयातों का आकलन 18405 मी. टन का किया है।

84. डीजीसीआईएस आंकड़ों और सहयोगी निर्यातक द्वारा प्रतिवेदित आंकड़ों की जांच दर्शाती है कि डीजीसीआईएस ने जांच अवधि के आंत आंकड़ों को बड़ी हद तक कम बताया है। सहयोगी निर्यातक और आयातक ने तालिका ने तालिका में निम्नानुसार दर्शाए अनुसार डीजीसीआईएस द्वारा प्रतिवेदित आयातों की तुलना में जांच अवधि के दौरान निर्यातों की काफी उच्चतर मात्राएं प्रतिवेदित की हैं :-

द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों का सारांश

पहियों का आयात, 2005	मात्रा (एमटन)	मूल्य (लाख रुपए)	औसत कीमत (रु./किगा.)
डीजीसीआई एंड एस	9245.65	3653.46	39.52
आईबीआईएस	7399.60	2605.67	35.21

स्रोत: डीजीसीआईएस, घरेलू उद्योग

निर्यातक और आयातक से प्राप्त आंकड़े

निर्यातक के अनुसार	ग्रेड	2004-05	जाँच अवधि
		सूचीबद्ध	सूचीबद्ध
	6.00-16"	0.02	18.17
	7.00-20"	0.01	0.98
	7.50-20"	16.23	213.93
	कुल	16.26	233.08
आयातक के अनुसार	16" रिंग	-	2.50
	20" रिंग	4.14	97.50
	कुल	4.14	100

टिप्पणी:- \* : संगठित, निर्यातक द्वारा इंगित पहियों के भार पर आधारित यथा:

(क) 6.0-16": 20.5 किग्रा; (ख) 7.0-20 ": 40 किग्रा;

(ग) 7.5-20 ": 47 किग्रा.।

85. अतः क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ, सहयोगी-निर्यातक द्वारा प्रतिवेदित आयात मात्रा का निम्नानुसार प्रयोग किया गया है :-

मापदण्ड (मी. टन में)	2002-03	2003-04	2004-05	जाँच अवधि
कुल आयात			***	***
चीन से आयात			***	***
सूचीबद्ध			100	1489
चीनी आयातों का बाजार हिस्सा (%)			100	100
घरेलू उद्योग की कुल बिक्री	52702	70757	88560	80818
मांग (सूचीबद्ध)	100	134	171	191
मांग में चीनी आयातों का हिस्सा (%)			1.49	19.75
घरेलू उद्योग का उत्पादन	***	***	***	***
उत्पादन की तुलना में चीनी आयात			1.50	24.44

स्रोत: घरेलू उद्योग, निर्यातक

प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश से आयात 2004-05 में मात्र \*\*\* मी. टन से निरपेक्षतः बढ़कर जांच अवधि में \*\*\* मी. टन हो गए। इसके अलावा, घरेलू मांग के सापेक्ष, संबद्ध देश से आयात 2004-05 में 1.49% से बढ़कर जांच अवधि में 19.75% हो गए जबकि घरेलू उद्योग के उत्पादन के सापेक्ष वे 1.50% से बढ़कर 24.44% हो गए। इसके अलावा, जहाँ मांग में चीनी आयातों का हिस्सा 2005 में बढ़कर 19.75% हो गया वहीं इसके संगत घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट आई। इसके मद्देनजर और भारत में कोई अन्य घरेलू उत्पादक न होने के चलते प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि संबद्ध देश से पाटित आयात प्रतिकूल मात्रात्मक प्रभाव दर्शाते हैं।

86. टीएमएल घरेलू उद्योग से संबद्ध वस्तु का प्रमुख उपभोक्ता द्वारा उत्पादों की तिमाही-वार खरीदों पर जब विचार किया जाता है तो घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में निम्नानुसार गिरावट देखी जाती है :-

तिमाही	मात्रा सूचीबद्ध, मूल्य लाख रुपए में					
	20" रिग			16" रिग		
	घरेलू उद्योग से टीएमएल खरीदी		निर्यात	घरेलू उद्योग से टीएमएल खरीदी		निर्यात
	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य
जुला-सित 04	238	***		67	***	
अक्तू-दिस 04	312	***		83	***	
जन-मार्च 05	310	***	14.62	94	***	0.02
अप्रैल-जून 05	197	***	53.13	72	***	---
जुला-सित 05	121	***	76.68	76	***	5.07
अक्तू-दिस 05	151	***	70.49	70	***	13.08

स्रोत: आयातक, निर्यातक



87. प्राधिकारी नोट करते हैं कि 2004 की चौथी तिमाही में लगभग \*\*\* नगों की घरेलू उद्योग से टीएमएल द्वारा 20" रिम के पहियों की खरीदी 2005 की दूसरी तिमाही में गिरकर \*\*\* नग हो गए जबकि 16" रिम के वर्ग में 2005 की पहली तिमाही में लगभग \*\*\* नगों की खरीदा में दूसरी तिमाही में सीधी गिरावट आई। इसके अलावा, 2005 की पहली तिमाही में संतुलित \*\*\* नगों से तीसरी तिमाही में लगभग \*\*\* नग पर पहुँचते हुए आयात 16" रिमों की तुलना में 20" रिम के वर्ग में ज्यादा थे।

(ख) घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन और क्षमता उपयोग पर वास्तविक और संभाव्य प्रभाव

88. घरेलू उद्योग के निष्पादन की इसकी क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और इन मापदण्डों पर पाटित आयातों के प्रभाव, यदि कोई हों, के संदर्भ में जांच की गई :-

मापदण्ड	2002-03	2003-04	2004-05	जाँच अवधि
क्षमता नग में ('000)	2380	2380	2724	2724
सूचीबद्ध	100	100	114	114
उत्पादन नग में ('000)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	131	162	157
क्षमता उपयोग (%)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	131	142	137
घरेलू मांग (मी. टन)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	134	171	191

टिप्पणी: बहु-उत्पाद संयंत्र होने के नाते, क्षमता और उत्पादन को क्षमता उपयोग की गणना करने के लिए संख्या में प्रदर्शित किया गया है।

स्रोत: घरेलू उद्योग

घरेलू उद्योग ने अपनी स्थापित क्षमता में 2004-05 में वृद्धि की किन्तु जाँच अवधि में क्षमता उपयोग में, उत्पादन में कमी के कारण गिरावट आई। उद्योग के अनुसार वे वैकल्पिक बाजारों की खोज कर रहे हैं फिर भी नये बाजारों को विकसित करने की प्रक्रिया व्यापक और समय-खपाऊ है और तब भी घरेलू बाजार के व्यापार के घाटे से बड़े अंतराल को भरना मुश्किल होगा। इसके अलावा, वर्तमान में केवल टीएमएल ने संबद्ध देश से आयात करना शुरू किया है किन्तु इस प्रवृत्ति के जारी रहने के परिणामस्वरूप अन्य परवर्ती मामले दायर होंगे और तब उन्हें उत्पाद के उत्पादन के लिए क्षमताओं को बंद करना होगा। उन्होंने बताया कि आयातक के संकेतनों के आधार पर मांग की प्रत्याशा में 2004-05 में विस्तारित क्षमता आयातों का आश्रय लेने के कारण किसी उपयोग में नहीं आई और अन्य उत्पादों के लिए संघटकों का विनिर्माण करने हेतु संबद्ध उत्पाद के लिए संघटक उत्पादन लाइनों की अप्रयुक्त क्षमता का पुनः प्रयोग करने की दृष्टि से किए गए प्रयासों से लाभप्रदता प्रतिकूलता: प्रभावित हुई। प्राधिकारी ने नोट किया कि मांग में लगातार वृद्धि हो रही है किन्तु यह वृद्धि बढ़ते आयातों द्वारा पूरी की जा रही है न कि बढ़ते घरेलू उत्पादन द्वारा

(ग) घरेलू उद्योग की बिक्री और बाजार हिस्से पर वास्तविक और संभावित प्रभाव

89. घरेलू बिक्री की मात्रा और घरेलू बिक्री पर पाटित आयातों के प्रभाव की घरेलू उद्योग की निरपेक्ष बिक्री, मांग और बाजार हिस्से के पहलू से जांच की गई है।

संबद्ध वस्तु की घरेलू माँग के आकलन के लिए प्राधिकारी ने भारत के कुल आयातों में घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा को जोड़ा है। संबद्ध वस्तु की मात्रा तथा कीमत से संबंधित आयात आँकड़ों हेतु निर्यातक के डाटा को आधार माना गया है। घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा निम्नलिखित है :-

मात्रा (मौ0 टन में)	2002-03	2003-04	2004-05	जॉच अवधि
घरेलू उद्योग-घरेलू बिक्री	52702	70757	88560	80818
सूचीबद्ध	100	134	168	153
संबद्ध देश से आयात			1336	19892
सूचीबद्ध (2004-05 = 100)			100	1489
घरेलू माँग	52702	70757	89896	100710
सूचीबद्ध	100	134	171	191
माँग में घरेलू उद्योग का %	100%	100%	98.51%	80.25%

स्रोत: घरेलू उद्योग, निर्यातक

90. 2004-05 में घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में वृद्धि हुई है और फिर जॉच अवधि में उसमें कमी आई हालाँकि वर्तमान में जॉच अवधि में भारत में संबद्ध वस्तु की माँग में निरंतर वृद्धि हो रही है जो लगभग 91% है। फिर भी घरेलू उद्योग को संबद्ध देश से आयातों के कारण लगभग 1400% की वृद्धि हुई है, इस बढ़ती माँग से लाभ नहीं मिला, जो कि बाजार अंश में उसके लगभग 20% के नुकसान से स्पष्ट होता है। प्राधिकारी ने इस तथ्य का संज्ञान लिया है कि संबद्ध उत्पाद का इस्तेमाल विश्व के बहुत कम देशों में हो रहा था और उसकी आवश्यकता सीमित थी जिससे सृजित विशिष्ट क्षमताओं का प्रभावी ढंग से इस्तेमाल नहीं हो सका न ही पाटित आयातों के कारण आए अंतराल को निर्यातों से पाटा जा सका।

91. वर्तमान में चल रहे विश्लेषण से पता चलता है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों में सापेक्ष रूप से तथा भारत में आयातों तथा भारत में आयातों और खपत की तुलना में वृद्धि हुई है।

#### च.2.1.2 पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

92. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी को यह विचार करना है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा कीमतों को अत्यधिक मात्रा में कम करने या कीमतों को बढ़ने से रोकने में जो अन्यथा काफी बढ़ जाते, ऐसे आयातों का अन्यथा प्रभाव है।

#### क) कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री

93. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री आय का निर्धारण के लिए कर तथा शुल्क, छूट तथा कमीशन और भाड़ा तथा परिवहन काटकर बिक्री मूल्य को ध्यान में रखते हुए किया गया है। आयातों की पहुँच कीमत का निर्धारण 1% पहुँच प्रभार तथा लागू मूल सीमा शुल्क के साथ भारत और सीआईएफ आयात कीमत को ध्यान में रखते हुए किया गया है। घरेलू उद्योग के निवल बिक्री आय की तुलना पाटित आयातों के पहुँच मूल्य से की गई थी कि यह जॉच की जा सके कि क्या पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है।

94. कीमत कटौती विश्लेषण के लिए घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत का निर्धारण सत्यापित लागत तथा उचित लाभ मार्जिन के साथ उद्योग के एसजीए व्ययों के आधार पर किया गया है। पाटित आयातों के कीमत कटौती प्रभाव का निर्धारण करने हेतु पाटित आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना संबद्ध वस्तु की क्षति-रहित कीमतों से भी की गई थी जो निम्नलिखित है :-

मानक (रू./प्रति किग्रा.)	2002-03	2003-04	2004-05	जाँच अवधि
पहुँच कीमत			38.09	39.71
घरेलू उद्योग की निवल बिक्री आय	***	***	***	***
कीमत कटौती			***	***
कीमत कटौती %			15-25	15-25
क्षति रहित कीमत (एनआईपी)				***
कम कीमत पर बिक्री <sup>2</sup>				***
कम कीमत पर बिक्री %				30-40

टिप्पणी: 1 निवल बिक्री आय-आयात की पहुँच कीमत

2 क्षति रहित कीमत-पहुँच मूल्य

स्रोत: घरेलू उद्योग, आयातक

95. प्राधिकारी ने नोट किया कि संबद्ध देश से आयातों का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की निवल बिक्री आय से बहुत कम रहा है जिसके कारण अत्यधिक कीमत कटौती हुई है। इसके अतिरिक्त जाँचाधीन अवधि में घरेलू उद्योग हेतु क्षति रहित कीमत \*\*\* रूपए/प्रति किग्रा. थी जिस पर पहुँच मूल्य 39.71 रूपए प्रति किग्रा. था जो घरेलू उद्योग द्वारा झेली गई अत्यधिक कम कीमत पर बिक्री की ओर संकेत करता है।

#### ख) कीमत अवमूल्यन और ह्रास

96 घरेलू कीमतों पर पाटित आयातों के कीमत अवमूल्यन प्रभाव की जाँच के लिए घरेलू उद्योग की निवल बिक्री आय की प्रवृत्ति की तुलना बिक्री लागत से की गई है। घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि जब से निविष्टि लागत बढ़ रही थी। उद्योग कीमतों में वृद्धि नहीं कर पाया क्योंकि आयात उनकी कीमतों का अवमूल्यन कर रहे थे। निम्नलिखित तालिका से यह पता चलता है कि हालांकि जाँचाधीन अवधि में संबद्ध वस्तु की बिक्री लागत तथा निवल बिक्री आय दोनों में वृद्धि हुई फिर भी बिक्री आय में हुई वृद्धि बिक्री लागत में हुई वृद्धि से कहीं अधिक कम रही है जिसके कारण लागतों की पूरी वसूली नहीं हो सकी। फिर भी अब तक कीमत ह्रास नहीं हुआ है।

मानक (रू०/किग्रा.)	2002-03	2003-04	2004-05	जाँच अवधि
घरेलू उद्योग की बिक्री लागत	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	101	115	126
निवल बिक्री आय	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	104	120	130
चीनी आयातों का पहुँच मूल्य			38.09	39.71
सूचीबद्ध			100	104

स्रोत: घरेलू उद्योग, आयातक

97. उपरोक्त विश्लेषण से यह संकेत मिलता है कि संबद्ध देशों से आयातों की पहुँच कीमत निवल बिक्री आय तथा घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से बहुत कम रही है। जिसके कारण अत्यधिक कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री तथा कीमत अवमूल्यन हुआ है।

### च.2.2 अन्य क्षति कारकों की जाँच

98. पिछले खंड में कुछ क्षति कारकों जैसे वास्तविक तथा संभावित ह्रास क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री तथा बाजार अंश; की आयातों की मात्रा में वास्तविक तथा संभावित वृद्धि के साथ जाँच की गई और यह नोट किया गया कि

- ❖ 2004-05 में अत्यधिक वृद्धि दर्शाने के बाद जाँचाधीन अवधि में घरेलू माँग में वृद्धि के बावजूद घरेलू बाजार हेतु घरेलू उद्योग के उत्पादन तथा बिक्री में कमी आई है। घरेलू बाजार में अच्छी माँग के बावजूद घरेलू उद्योग को काफी हद तक उत्पादन बढ़ाने से रोका गया है।
- ❖ हालांकि घरेलू उद्योग की उत्पादन तथा घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री की क्षमता में वृद्धि हुई है फिर भी यह उन क्षमताओं का समुचित उपयोग करने में असफल रहा है।
- ❖ 2004-05 तक संतोषजनक वृद्धि के बाद घरेलू उद्योग की बिक्री में काफी कमी आई जिसके कारण घरेलू उद्योग के बाजार अंश में भी कमी आई। घरेलू उद्योग को माँग में वृद्धि का लाभ नहीं मिला है।

### क) लाभ पर वास्तविक तथा संभावित प्रभाव

99. घरेलू उद्योग की लाभप्रदता की स्थिति निम्नलिखित है :-

मानक (लाख रूपए में)	2002-03	2003-04	2004-05	जाँच अवधि
घरेलू उद्योग की बिक्री लागत	***	***	***	***
घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत	***	***	***	***
लाभ/हानि (रु./किग्रा.) <sup>1</sup>	***	***	***	***
सूचीबद्ध	(100)	(2)	72	(46)
घरेलू बिक्री पर लाभ/हानि	***	***	***	***
सूचीबद्ध	(100)	(2)	121	(68)
व्याज	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	62	74	99
सीबीआईटी	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	183	469	161

टिप्पणी: <sup>1</sup> बिक्री कीमत-बिक्री लागत

स्रोत: घरेलू उद्योग

प्राधिकारी ने देखा है कि जहाँ 2004-05 तक घरेलू उद्योग के निष्पादन में सुधार हुआ या वहीं जॉचाधीन अवधि में इसमें तेजी से गिरावट आई। जॉचाधीन अवधि में संबद्ध उत्पाद के अत्यधिक पाटन के कारण घरेलू उद्योग के वित्तीय मानक प्रभावित हुए। जहाँ तक निर्यातक के इस दावे का संबंध है कि घरेलू उद्योग के हानि निर्धारण, जो जॉचाधीन अवधि में अत्यधिक थी, का तरीका असंगत था। प्राधिकारी ने यह पाया कि जॉचाधीन अवधि में बिक्री लागत और बिक्री कीमतों में हुई वृद्धि 2003-04 की तुलना में क्रमशः 24.71% तथा 23.69% थी। इसके कारण लागत से 1.02% कम की वसूली हुई जिसके साथ-साथ जॉचाधीन अवधि में बिक्री मात्रा भी अपेक्षाकृत अधिक थी। इसके परिणामस्वरूप हानि की मात्रा में वृद्धि हुई।

### ख) रोजगार तथा वेतन पर वास्तविक तथा संभावित प्रभाव

100. घरेलू उद्योग का रोजगार स्तर निम्नलिखित रहा है :-

हानक	2002-03	2003-04	2004-05	जॉच अवधि
कर्मचारी (सं०)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	124	128	130
वेतन (लाख रु०)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	118	122	138
उत्पादन (मी. टन)	***	***	***	***
वेतन/उत्पादन इकाई	3.89	3.54	2.77	3.41

स्रोत: घरेलू उद्योग

प्राधिकारी ने नोट किया कि घरेलू उद्योग का रोजगार स्तर 2003-04 से कमोबेश स्थिर रहा है। बहु-उत्पाद कम्पनियाँ होने के नाते घरेलू उद्योग में रोजगार स्तर स्वतः क्षति का निर्णायक संकेत नहीं हो सकता। घरेलू उद्योग ने अनुरोध किया है कि यद्यपि पाटन के क्षतिकारक प्रभाव अब तक सामने नहीं आए हैं लेकिन निरंतर पाटन से अत्यधिक विपरीत प्रभाव पड़ेगा। घरेलू उद्योग के एक घटक को अपने कर्मचारियों को संबद्ध वस्तु के उत्पादन से हटाकर दूसरे उत्पादों के उत्पादन में लगाना पड़ा था। प्राधिकारी ने यह भी नोट किया कि सापेक्ष रूप से घरेलू उद्योग के वेतन में वृद्धि हुई थी और साथ-साथ घरेलू उत्पादन भी बढ़ा है जिसके कारण प्रति इकाई उत्पादन के वेतन में कमी आई। अतः इस मानक के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं पहुँची है।

### ग) उत्पादकता पर वास्तविक तथा संभावित प्रभाव

101. घरेलू उद्योग की उत्पादकता निम्नलिखित तालिका में दी गई है। प्राधिकारी ने नोट किया कि घरेलू उद्योग में प्रति कर्मचारी उत्पादकता तथा बिक्री में 2004-05 तक वृद्धि हुई है जिसके बाद इन दोनों मानकों में कमी आई है। अतः जॉचाधीन अवधि में पाटित आयातों के कारण क्षति के प्रमाण हैं।

मानक	2002-03	2003-04	2004-05	जॉच अवधि
उत्पादन (मी. टन)	***	***	***	***
उत्पादकता प्रति कर्मचारी	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	107	146	129
घरेलू बिक्री (लाख रूपए)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	140	201	197
बिक्री प्रति कर्मचारी (रु. में)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	112	169	158

स्रोत: घरेलू उद्योग

घ) नकद प्रवाह, लाभ तथा निवेश से आयच पर वास्तविक तथा संभावित प्रभाव

102 घरेलू उद्योग के सभी घटक बहु-उत्पाद कम्पनियाँ हैं; अतः क्षति के लिए पूरी कम्पनी के नकद प्रवाह की जॉच समुचित नहीं है। इसलिए प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की नकद लाभ स्थिति, नियोजित पूंजी तथा निवेश पर आय की जॉच की है।

मानक (लाख रूपए में)	2002-03	2003-04	2004-05	जॉच अवधि
पीबीटी	***	***	***	***
सूचीबद्ध	(100)	(2)	121	(68)
मूल्यह्रास	***	***	***	***
नकद लाभ	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	221	374	184
पीबीआईटी	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	183	469	161
नियोजित पूंजी (एनएफए)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	109	142	142
नियोजित पूंजी पर आय (एनएफए) (%)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	168	331	143

स्रोत: घरेलू उद्योग

यह देखा गया है कि 2002-03 में \*\*\* रूपए की हानि की स्थिति की तुलना में अगले वर्ष घरेलू उद्योग ने हानि को काफी कम कर लिया। 2004-05 में, जबसे विपरीत स्थितियाँ शुरू हुई, घरेलू उद्योग \*\*\* रूपए का लाभ हुआ जो फिर से जॉचाधीन अवधि में \*\*\* रूपए की हानि में बदल गया जिससे 2004-05 और यहाँ तक कि 2003-04 की तुलना में भी अत्यधिक ह्रास लक्षित होता है। घरेलू उद्योग की नकद लाभ स्थिति में, जिसमें 2004-05 तक निरंतर सुधार हुआ था, जॉचाधीन अवधि के दौरान बढ़ते ह्रास तथा क्षमता में वृद्धि के कारण ब्याज लागत में वृद्धि के परिणाम स्वरूप गिरावट आई। 2004-05 तक नियोजित पूंजी पर आय में सुधार हुआ लेकिन जॉचाधीन अवधि में इसमें तेजी से गिरावट आई।

**ड) वस्तु सूची**

**103** घरेलू उद्योग में वस्तु सूची निम्नलिखित रही है :-

मानक (मी0 टन में)	2002-03	2003-04	2004-05	जाँच अवधि
वस्तुसूची का औसत स्टॉक	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	124	116	173
बिक्री मात्रा	52702	70757	88560	80818

स्रोत: घरेलू उद्योग

प्राधिकारी ने नोट किया कि 2004-05 तक बढ़ने के बाद जाँचाधीन अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में गिरावट आई। वस्तु सूची बिक्री का एक छोटा सा हिस्सा रही है क्योंकि उत्पाद आदेश के आधार पर तैयार किया जाता है और घरेलू उद्योग द्वारा कार्यशील पूँजी को दुरुपयोग से बचाने का प्रयास सुविचारित रूप से किया गया है। उद्योग के आदेश-पर-उत्पादन के अनुरोध के मद्देनजर क्षति विश्लेषण हेतु इस मानक पर विचार नहीं किया जा रहा है।

**च) पूँजी जुटाने की क्षमता**

**104** निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष इस तथ्य के संबंध में ऐसे कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किए गए हैं जो यह प्रमाणित करे कि पूँजी जुटाने के संबंध में घरेलू उद्योग को परेशानी हो रही है।

**छ) वृद्धि**

**105** प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि यद्यपि माँग में संतोषजनक वृद्धि हुई है फिर भी उत्पादन, बिक्री, बाजार अंश, लाभ नकद प्रवाह और निवेश से आय जैसे मानकों के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में अत्यधिक कमी आई है।

**ज) पाटन मार्जिन की मात्रा**

**106.** प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश से पाटन मार्जिन, जो क्षति को लक्षित करता है, अत्यधिक तथा न्यूनतम से अधिक।

**च.2.3 समग्र आकलन**

**107.** कारकों के उपर्युक्त विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि घरेलू बाजार में माँग अच्छी होने के बावजूद उत्पादन में कमी, बिक्री, कम निवल बिक्री प्राप्तियों, अधिक सामान सूची, निवेश तथा लाभ से घटती आय के कारण घरेलू उद्योग क्षति का सामना कर रहा है। अधिकांश क्षति मानदण्डों में 2004-05 तक सुधार होने के बाद जाँच अवधि के दौरान प्रतिकूल प्रभाव पड़ा और अब वे नकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित कर रहे हैं। आयातों के कारण अत्यधिक कीमत कटौती हुई और घरेलू उद्योग को कीमतों में मंदी और कम कीमत पर बिक्री का सामना करना पड़ा। इसे हुई क्षति वास्तविक तथा उल्लेखनीय है।

### च.3 क्षति का खतरा

108. घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि संबद्ध देशों से इस उत्पाद के लगातार आयात के कारण उसे निम्नलिखित रूपों में वास्तविक क्षति का खतरा उत्पन्न हो गया है:-

- (i) निरपेक्ष रूप में आयातों में वृद्धि के कारण इसका बाजार हिस्सा कम हो गया है ।
- (ii) निर्यातकों द्वारा पेशकश कम कीमतों के मद्देनजर आयातों में संभावित बहुत अधिक है, परिणामतः निर्यातकों को दिए गए आर्डरों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है ।
- (iii) उत्पाद की मांग निरंतर बढ़ी है और यह बाजार में प्रत्यक्ष रूप से उपलब्ध नहीं है और इसके लिए सप्लाई आर्डर अग्रिम रूप से देना पड़ता है ।
- (iv) उल्लेखनीय कीमत कटौती के कारण उपभोक्ता इसकी खरीद विदेशी उत्पादक (उत्पादकों) से करने और घरेलू उद्योग अपनी कीमतें घटाने की ओर प्रवृत्त होगा ।
- (v) निर्यातकों द्वारा अपने देश में सृजित क्षमताएं घरेलू बाजार की मांग से अधिक है ।

109. निर्यातकों ने प्रारंभिक जांच परिणाम जारी होने के पश्चात कहा है कि घरेलू उद्योग द्वारा क्षति के खतरे के बारे में कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई है । पाटनरोधी नियमावली में प्रावधान है कि वास्तविक क्षति के खतरे का निर्धारण तथ्यों के आधार पर किया जाएगा न कि केवल कल्पना अथवा अनुमानों के आधार पर । चूंकि घरेलू उद्योग ने अपने लिखित निवेदन में इसके समर्थन में कोई साक्ष्य या आंकड़े प्रस्तुत नहीं किए हैं, अतः ऐसे अप्रमाणित आरोप को खारिज कर दिया जाना चाहिए ।

110. तथापि घरेलू उद्योग ने क्षति के खतरे के संबंध में अपने भय की पुष्टि की है और कहा है कि जिस दर से आयातों में वृद्धि हुई है वह वास्तविक है । इसके अलावा, चूंकि यह उत्पाद ओ ई एम उत्पाद है और उपभोक्ता इसकी लागत के फायदे से अच्छी तरह अवगत है अतः उनका मानना है कि उपभोक्ता आयातित उत्पाद ही खरीदेंगे, जो जांच अवधि के पश्चात के तथ्यों से स्पष्ट है क्योंकि आयात जिन कीमतों पर उल्लेखनीय मंदी/दबावपूर्ण प्रभाव होगा और इससे आयातों की मांग बढ़ जाएगा । कीमत कटौती के कारण बिक्री से प्राप्त राजस्व का नुकसान अत्यधिक पाया गया है । घरेलू उद्योग ने यह भी दावा किया है कि जिस दर से टी एम एल तथा अन्य भारतीय उत्पादक आयातित उत्पाद हेतु आर्डर दे रहे हैं उसे सिद्ध होता है कि चीन के उत्पादकों के पास बेशी क्षमताएं अत्यधिक हैं और निर्बाध पाटन के कारण खतरा और अधिक बढ़ गया है । टी एम एल ने अपनी खरीद क्रमशः बढ़ाकर प्रति माह 65000 व्हील कर दी है जो निकट भविष्य में बढ़कर 100,000 व्हील प्रति माह हो जाएगी जो इसकी जरूरत के लगभग 55-60 प्रतिशत के बराबर है और जांच अवधि के पश्चात के घटनाक्रम से अन्य भारतीय उत्पादकों द्वारा आयातों की पुष्टि होती है । अतः, यदि पाटन जारी रहने दिया जाता है तो ऐसी स्थिति में भारतीय संयंत्र बंद हो जाएंगे । इसके अलावा घरेलू उद्योग ने कहा है कि जब कीमत के प्रति स्वाभाविक रूप से चिन्तित ओ ई एम द्वारा आयातित उत्पाद से घरेलू कीमतों में 21 प्रतिशत कटौती होती है और उनकी जरूरत दीर्घावधिक आधार की है, अतः खतरा मात्र कल्पना नहीं अपितु एक व्यावसायिक यथार्थ है । इस प्रकार वे भय को निर्यातक ने केवल अटकलबाजी, आधारहीन और जांच अवधि के बाद की घटना और मामले की दृष्टि से अप्रासंगिक कहकर खारिज कर दिया है ।



111. घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं को यह बताना चाहिए कि संबद्ध देश से संबद्ध उत्पाद प्राप्त करने का निर्णय उन्होंने कब लिया, इस निर्णय तक पहुँचने में आंतरिक निर्णयों का ब्यौरा क्या था, इसकी मात्रा तथा चीन से मंगाने में कीमत में क्या फायदा था और इसे कितनी अवधि तक मंगाया गया; ताकि इससे संबद्ध उत्पाद मंगाने के बारे में उनकी दीर्घाविधिक व्यावसायिक योजनाएं प्रकट होंगी। निर्यातक ने इस मांग को अवांछित और अप्रासंगिक और अपने ग्राहकों से बाजार आसूचना एकत्र करने का एक तरीका करार देते हुए इसे खारिज कर दिया है।

#### च.4 क्षति से संबंधित निष्कर्ष

112. प्राधिकारी द्वारा नोट किया गया है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों के प्रभाव मात्रा तथा कीमत दोनों रूपों में हुए हैं। मानदण्डों में जांच अवधि के दौरान अनुकूलतम स्तर से कम वृद्धि जैसे उत्पादन (मांग में वृद्धि की तुलना में 30 प्रतिशत कमी), क्षमता उपयोग (ईष्टतम से कम), जांच अवधि के दौरान लाभ में गिरावट, बाजार हिस्से में गिरावट (19.75 प्रतिशत), सकारात्मक कीमत कटौती, लगाई गई पूंजी से आय में कमी, उल्लेखनीय पाटन मार्जिन, अनेक मानदण्डों में नकारात्मक वृद्धि घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में भारी गिरावट दर्शाती है। रोजगार तथा मजदूरी जैसे मानदण्डों में क्षति परिलक्षित नहीं होती है। उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

#### घ. कारणात्मक संबंध

113. वास्तविक क्षति के अस्तित्व तथा घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों की मात्रा तथा कीमत प्रभाव की पुष्टि पिछले खण्ड में की जा चुकी है तथापि गैर-कारणात्मक मुद्दों के संबंध में अनिवार्य कारकों की जांच निम्नानुसार की गई है:-

- ❖ मांग में कमी : क्षति की जांच की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं की मांग में अत्यधिक वृद्धि हुई है। अतः मांग में संभावित संकुचन को घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं माना जा सकता।
- ❖ खपत का तरीका : किसी भी हितबद्ध पक्ष ने खपत के तरीके में किसी उल्लेखनीय परिवर्तन का आरोप नहीं लगाया है।
- ❖ अन्य देशों से आयात : संबद्ध देश से इतर देशों के मूल की संबद्ध वस्तु का कुल आयात शून्य है, अतः यह माना जाता है कि उनका घरेलू उद्योग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा होगा।
- ❖ प्रतिस्पर्धा की शर्तें : वस्तुओं का निर्यात मुक्त रूप से किया जा सकता है। याधिकाकर्ता संबद्ध वस्तुओं के एकमात्र उत्पादक हैं। अतः घरेलू प्रतिस्पर्धा को घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं माना जा सकता।
- ❖ प्रौद्योगिकी का विकास : प्रौद्योगिकी में परिवर्तन का कोई उल्लेखनीय आरोप नहीं है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो।
- ❖ घरेलू उद्योग का निर्यात कार्य निष्पादन : जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की कुल बिक्री में उसके निर्यात का हिस्सा उल्लेखनीय है। केवल घरेलू बिक्री के संबंध में विभिन्न आर्थिक सूचकों के कार्य निष्पादन का निर्धारण केवल घरेलू बिक्री के संबंध में किया गया है। अतः प्राधिकारी का अभिमत है कि घरेलू उद्योग के निर्यात कार्य निष्पादन में परिणामस्वरूप उसे वास्तविक क्षति नहीं हुई है।

निर्यात	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
मी टन में	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	187	140	223

114. घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि आयातों के अभाव में वर्ष 2004-05 तक उनके कार्य निष्पादन में सुधार और आयातों की उपस्थिति में जांच अवधि के दौरान गिरावट से घरेलू उद्योग को क्षति तथा पाटित आयातों एवं घरेलू उद्योग की क्षति के बीच कारणात्मक संबंध, दोनों सिद्ध होते हैं। संबद्ध देशों से आयातों में वृद्धि निरपेक्ष रूप में हुई जिसकी परिणति आयातों के बाज़ार हिस्से में वृद्धि और घरेलू उद्योग बाज़ार हिस्से के नुकसान के रूप में हुई। पाटित आयातों की वजह से कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री के कारण लाभप्रदता में गिरावट शुरू हो गई और घरेलू उद्योग न्यायोचित कीमत वृद्धि से वंचित हो गया। इसके अलावा घरेलू उद्योग के बाज़ार हिस्से में गिरावट के कारण वह बिक्री जिसके कारण क्षमता उपयोग में गिरावट आई। अतः मांग बढ़ने के बावजूद वृद्धि बाधित हो गई। अतः स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति पाटित आयातों के कारण हुई।

#### छ. 1 कारणात्मक संबंध को स्थापित करने वाले कारक

115. क्षति की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन की जांच दर्शाती है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में वास्तविक गिरावट आई है। पाटित आयातों की मात्रा में वृद्धि के कारण घरेलू उद्योग के बाज़ार हिस्से में उल्लेखनीय गिरावट आई, बाज़ार में मांग में वृद्धि के अनुरूप बिक्री में वृद्धि नहीं हुई और इसमें घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्री तथा क्षमता उपयोग में वृद्धि प्रभावित हुई है। पाटित आयात कीमतों और तत्पश्चात संबद्ध देशों से आयातों के पहुँच मूल्य की परिणति अत्यधिक कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री में हुई। कम कीमत पर बिक्री के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाज़ार हिस्से में उल्लेखनीय गिरावट आई और घरेलू उद्योग की बिक्री की मात्रा में भी कमी आई। यह देखा जा सकता है कि घरेलू बाज़ार में मांग की स्थिति बहुत अच्छी रहने के बावजूद पाटित आयातों के कीमत दबाव के कारण घरेलू उद्योग उत्पादन लागत वसूल करने, बिक्री की मात्रा बढ़ाने और अपनी क्षमता का पूर्ण उपयोग करने में सफल नहीं हो सका। इसके परिणामस्वरूप निरंतर सुधार दर्शाने के बाद जांच अवधि के दौरान लाभ, नकद प्रवाह तथा घरेलू उद्योग के निवेश में गिरावट आई।

116. उपर्युक्त गैर कारणात्मक विश्लेषण दर्शाता है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मात्रा तथा कीमत प्रभाव के कारण घरेलू उद्योग को उल्लेखनीय क्षति हुई है। अतः प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि संबद्ध देशों से ऐसे पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति वास्तविक तथा अत्यधिक है।

#### ज. क्षति तथा क्षति मार्जिन की सीमा

117. प्राधिकारी ने रिलायन्स इण्डस्ट्रीज बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी के मामले में उच्चतम न्यायालय के निर्णय में निहित सिद्धांतों के मद्देनजर जांच अवधि के दौरान घरेलू उत्पादक की उत्पादन लागत तथा अन्य संबंधित लागतों को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग के लिए क्षति रहित कीमत का निर्धारण किया है, जो \*\*\*\* रुपये प्रति किग्रा. है।

क्षति मार्जिन की गणना (रुपये/किग्रा. में)			
क्षति रहित कीमत	पहुँच मूल्य	क्षति मार्जिन	आई एम %
	39.71	***	30-40
***	37.45	***	40-50

### झ. भारतीय उद्योग के हित

118. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्कों का प्रयोजन सामान्यतः पाटन की अनुचित पद्धति द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना और भारतीय बाजार में खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को बहाल करना है, जो देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी शुल्क लगाने से संबद्ध वस्तुओं के उपयोग से विनिर्मित उत्पादों का कीमत स्तर प्रभावित हो सकता है जो उनकी सापेक्ष प्रतिस्पर्धात्मकता को भी प्रभावित कर सकता है, परन्तु इससे उचित प्रतिस्पर्धा तथा भारतीय बाजार में इस उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी।

### ञ. निष्कर्ष

119. उपर्युक्त पर विचार करने के बाद प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि:-

- ❖ संबद्ध वस्तुएं भारतीय बाजार में संबद्ध देशों में उनके सामान्य मूल्य से कम कीमतों पर प्रविष्ट हुई हैं।
- ❖ संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तुओं की पाटन मार्जिन अत्यधिक तथा न्यूनतम से अधिक है।
- ❖ घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।
- ❖ क्षति संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के पाटित आयातों के कारण हुई है।

### ट. सिफारिशें

120. नियमावली में निर्धारित शर्तों के अनुसार पाटन, क्षति तथा पाटन व घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की जांच शुरू करके सम्पन्न करने, संबद्ध देशों के विरुद्ध सकारात्मक पाटन मार्जिन स्थापित करने और ऐसे पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति को देखते हुए प्राधिकारी का अभिमत है कि पाटन तथा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर करने के लिए निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाना अपेक्षित है। अतः प्राधिकारी संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर निम्नलिखित रूप तथा तरीके से निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाना आवश्यक समझते हैं और इसकी सिफारिश करते हैं।

121. कम शुल्क के नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन अथवा क्षति की कमतर मार्जिन के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं, ताकि घरेलू उद्योग की क्षति दूर हो सके। क्षति की मार्जिन, पाटन मार्जिन से कम है। तदनुसार प्राधिकारी सिफारिश करते हैं कि चीन जन गण के मूल के अथवा वहां से निर्यातित, सीमाशुल्क टैरिफ वर्गीकरण अधिनियम 1975 के अध्याय 87 के अंतर्गत आने वाली संबद्ध वस्तुओं के सभी आयातों पर इस संबद्ध में केन्द्र सरकार द्वारा जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से निश्चित आधार पर रुपये के रूप में निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए, जिसका संग्रहण निश्चयात्मक रूप से अनंतिम शुल्क लगाने की तारीख से किया जाएगा। पाटनरोधी शुल्क संलग्न तालिका के कॉलम 9 में उल्लेखनीय धनराशि होगी।

122. उपर्युक्त के अध्याधीन दिनांक 12 जनवरी, 2007 को जारी अधिसूचना द्वारा अधिसूचित तथा दिनांक 21 फरवरी तथा 12 मार्च, 2007 के शुद्धि पद्धों द्वारा संशोधित अनंतिम जांच परिणाम की एतद्वारा पुष्टि की जाती है।

#### ठ. आगे की प्रक्रिया

123. केन्द्र सरकार के आदेशों के विरुद्ध कोई अपील जो इस सिफारिश से उत्पन्न हो सकती है इस अधिनियम के संगत प्रावधानों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क एवं सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जा सकेगी।

124. प्राधिकारी यहाँ यथा-अनुशंसित निश्चयात्मक उपाय को जारी रखने, इसमें परिवर्तन करने अथवा इसे समाप्त करने की जरूरत की अधिनियम के संगत प्रावधानों और इस संबंध में समय-समय पर जारी सार्वजनिक सूचनाओं के अनुसार समय-समय पर समीक्षा कर सकते हैं। ऐसी किसी समीक्षा के लिए कोई अनुरोध प्राधिकारी द्वारा तब तक स्वीकार नहीं किया जाएगा जब तक इसे किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा इस प्रयोजनार्थ निर्धारित समय-सीमा के अनुसार दाखिल न किया गया हो।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

#### शुल्क तालिका

क्र. सं.	उपशीर्ष अथवा टैरिफ मद	वस्तुओं का विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक ****	निर्यातक ***	शुल्क की राशि	माप की इकाई	मुद्रा
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1.	8708.70	स्टील व्हील्स	16"-20" का सांकेतिक व्यास	चीन जन गण	चीन जन गण	मै. झेनजिंग व्हील ग्रुप कं.	मै. झेनजिंग व्हील ग्रुप कं.	14710	मी.टन	भारतीय रुपया
2.	वही	वही	वही	वही	वही	उत्पादक/निर्यातक का कोई संयोजन (उपर्युक्त को छोड़कर)		16970	मी.टन	भारतीय रुपया
3.	वही	वही	वही	चीन जन गण	चीन जन गण से इतर अन्य कोई	कोई	कोई	16970	मी.टन	भारतीय रुपया
4.	वही	वही	वही	चीन जन गण से इतर अन्य कोई	चीन जन गण	कोई	कोई	16970	मी.टन	भारतीय रुपया

**MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY****(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 28th November, 2007

**FINAL FINDINGS**

**Subject : Anti-dumping investigations concerning imports of Flat Base Steel Wheels originating in/exported from China PR.**

**No. 14/8/2005-DGAD.**—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, (hereinafter referred to as the Rules) thereof:

2. WHEREAS on the basis of an application filed by M/s. Kalyani Lemmerz Ltd, Pune and Wheels India Ltd, Chennai (herein after referred to as the Applicant) the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), in accordance with the Act and Rules made there under, issued a public notice dated 31<sup>st</sup> May 2006, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations into alleged dumping of flat base Steel Wheels (herein after referred to as subject product/goods), originating in or exported from China PR (herein after referred to as subject country).

3. The Authority notified its preliminary findings vide Notification dated 12<sup>th</sup> January 2007 and amendments dated 21<sup>st</sup> February 2007 and 12<sup>th</sup> March, 2007 recommending provisional anti-dumping duty on import of subject goods from the subject country and acting upon such recommendations of the Authority, the Department of Revenue, vide its notification No.51/2007-Customs dated 29<sup>th</sup> March, 2007, imposed provisional anti-dumping duty on the subject goods.

**A. PROCEDURE**

4. The procedure described below has been followed with regard to this investigation after issuance of the public notice notifying the preliminary findings of the Authority.

- (i) The Designated Authority sent copies of preliminary findings dated 12<sup>th</sup> January 2007 to all known interested parties including, the responding exporter, importers and users of the subject goods, Embassy of the subject country in India, and the domestic industry and invited the comments of the interested parties on the preliminary findings. Parties to this investigation were requested to make their views known in writing within 40 days of the notification of the preliminary findings.

- (ii) The comments of the interested parties in response to the preliminary findings have been taken on record and the Authority has examined the issues raised therein in this disclosure statement.
- (iii) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- (iv) Optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India was worked out based on the information furnished by the petitioner on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) so as to ascertain whether anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to domestic industry.
- (v) The Authority held a public hearing on 14.02.2007 to provide an opportunity to all interested parties to present their view. Oral submissions made by the parties during the public hearing reproduced in writing have been taken on record for the purpose of this investigation.
- (vi) Confidentiality claims of various interested parties in respect of the data submitted by them have been examined. The information, which is by nature confidential or which has been provided on a confidential basis by the interested parties, along with non-confidential summary thereof, has been treated confidential. \*\*\* in this finding represents information furnished by the domestic industry on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.
- (vii) The essential facts of the case were disclosed to all interested parties in the form of confidential and general disclosures on October 2007. Comments of the interested parties on the disclosure statement, to the extent they are relevant and supported by evidence, have been considered by the Authority.
- (viii) Investigation was carried out for the period starting from 1<sup>st</sup> January 2005 to 31<sup>st</sup> December 2005 (POI).
- (ix) For the sake of brevity, the comments of interested parties and issues raised prior to the preliminary findings and addressed therein have not been repeated in this finding.

## **B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE**

5. As recorded in the preliminary findings, the product involved in the current investigation is flat base steel wheels of size 16" to 20" nominal diameter used in tubed tyre applications in commercial vehicles. A wheel is an assembly of rim and disc with a demountable ring which is mounted on the axles of vehicles and fitted with tyres to enable vehicle movement. Commercial vehicles classified as light, medium and heavy vehicles comprise of buses, lorries including trucks, trailers and tempos. Wheels are defined under heading 8708.70 in Chapter 87 of the Customs Tariff Act and ITC HS classification. The Customs classification, however, is indicative only and is in no way

binding on the scope of the present investigation. There is no issue raised by any interested party in this regard.

6. There is no difference in the subject goods produced by the domestic industry and the subject product imported from the subject country. The product is being directly imported by the consumers, who use the domestic and imported product interchangeably. The two are technically and commercially substitutable. The products produced by the domestic industry and imported from the subject country are identical in all essential characteristics and therefore, are like articles within the meaning of the term under the Rules. No issue has been raised by any interested party in this regard.

### **C. STANDING OF THE DOMESTIC INDUSTRY**

7. The application has been jointly filed by M/s. Kalyani Lemmerz Ltd. and Wheels India Ltd. The applicants are the only two domestic producers of the subject goods and account for 100% of domestic production. The petitioners, therefore, satisfy the standing to file the present petition and constitute domestic industry within the meaning of the Rules. No interested party has raised any issue in this respect.

### **D. ISSUES RAISED BY INTERESTED PARTIES**

#### **D.1 Confidentiality**

8. In addition to comments relating to various aspects of the case, both the domestic industry and the participating exporter from China PR have raised the issue of excessive confidentiality claimed by the other party. The domestic industry has argued that (a) the exporter has made a lot of submissions without simultaneously providing a non-confidential version; (b) the exporter has not disclosed a lot of information nor given any reason for claiming confidentiality (c) neither in law nor in fact can the business licence of a company be claimed confidential as the exporter had done and (d) given the manner of exporter response, they should be allowed to comment on the information provided to the Authority to rule out the possibility of the exporter filing incorrect information.. The exporter, however, has argued that the domestic industry has not provided a proper non-confidential version of its cost of production and other details or of submissions made subsequent to the initial application.

9. The Authority noted the degree and extent of cooperation and information submitted by the participating exporter and that non-confidentiality issues have been subsequently addressed by filing non-confidential versions of submissions made. The submissions filed by the exporter have been accepted though certain claims made have not been accepted, but the non-acceptance of certain claims or rejection of certain information by the Authority does not render the exporter non-cooperative. The information, which is by nature confidential or which has been provided on a confidential basis by the interested parties' along with non-confidential summary thereof, has been treated confidential.

## **D.2 On inputs and related aspects**

### **a) Prices of Steel**

10. In its post-preliminary findings comments, the domestic industry has charged that Chinese steel prices were lower than international prices and as the exporter had conceded the advantage of a lower price, market economy status could not be granted as prices of major inputs did not substantially reflect market values. The exporter has refuted this submission, stating that the law did not provide that prices prevailing in the exporting country should be higher than the international prices and the former should be considered irrespective of whether they were in line with international prices.

### **b) Subsidies on Steel**

11. The domestic industry has claimed that the Chinese Government provided support to the steel industry in the form of grants of cash and land, transfer of ownership rights on non-commercial terms, equity-conversion of and waiver of debt, inaction on non-performing loans, grant of preferential loans, directed credit and tax incentives including exemptions, targeted infra-structure development, manipulation of raw material prices and value of the Chinese renminbi (RMB), subsidies on inputs like coal, metallurgical coke, electricity, etc. Therefore, steel prices in China were not the result of any natural advantage enjoyed by that country but of ad-hoc interference in the industry by the Govt, to make steel cheaper. Such ad-hoc systems of subsidies that were not sector/industry/product /region- specific and lacked well laid-down objective eligibility criteria typified State interference and did not lend themselves to countervailing duty investigations. Economic decisions of Chinese firms were, thus, not made in response to market signals and were with significant state interference. Besides, the United States has reportedly sought WTO ruling against China's steel subsidies.

12. The exporter has rejected these contentions, stating that the submissions of the domestic industry lacked merit, as they had not provided evidence about the alleged subsidies to the steel industry. Further, Chinese electricity prices were comparable to prices prevailing in a number of market economy countries. Ad-hoc subsidies, by nature, would be specific to industries/enterprises and have restricted availability, so that they were counter-vailable. Besides, subsidies did not make an economy non-market, as all countries grant them. The domestic industry could file a separate petition seeking levy of countervailing duties depending upon the subsidies.

## **D.3 Contradictory responses made by the exporter**

### **a) On production process**

13. The domestic industry has claimed that the exporter has created a lot of confusion about the production process as below



Issue	Contradictory claims
Production process employed	<ul style="list-style-type: none"> <li>➤ The product concerned is assembly of disc, rim and ring.</li> <li>➤ The materials for production of disc is steel coin, for rim is steel of rim and for ring is steel of ring</li> <li>➤ Raw materials required are steel coil, steel of ring and steel of rim</li> </ul>

Initially, the manufacturing process was stated to be an assembly of disc, rim and ring, as established by statement of cost of production, which showed that 93% of the cost was on account of the raw material, steel, which could only be the case if the production process was an assembly line operation. Besides, the company had earlier claimed that the material of production of disc was steel coin but later claimed that the raw material used was HR coil. In addition, though the exporter had claimed earlier that it was purchasing all the inputs, they subsequently maintained that coin and coil were the raw materials. The domestic industry has held that coin and coil were two different products, coin being an intermediate stage in disc production. In response, the exporter has stated that due to certain translation errors, as clarified to the Authority, inputs have been denoted as steel of coin, rim and ring whereas it should have been steel for coin, rim and ring. In any case, they had provided a detailed production process chart that expressly shows that coin, rim and rings are manufactured by them and not bought out.

#### b) On wastage

14. The domestic industry states that the exporter has charged the domestic industry with higher wastage, but in truth, the exporter has not provided actual information on steel consumed and has under-stated consumption by resorting to apportionment of cost between the subject product and other products on product weight basis. Initially, the exporter had stated that they did not prepare standard cost reviews, but later they reported wastage which could not flow from the company's system and was, therefore, unreliable. The domestic industry has alleged that wastage from the stage of steel coin differed entirely from the stage of coil production, being lower. Besides, the company's investment plans testified that there had been no effort to add the press required for coin forming. Hence, the company was not undertaking production from the stage of steel coil, but starting with steel coin, which would be costlier to account for the wastage and the conversion costs involved in its production.

#### c) On affiliated companies

15. The domestic industry has highlighted contradictions made by the exporter as below and

Issue	Contradictory claims
Related companies	<ul style="list-style-type: none"> <li>➤ The company is the parent company of the group</li> <li>➤ Pl. see attachment 2, the list of all companies in the group</li> <li>➤ The company is not under common control of any other entity</li> <li>➤ The company has a number of related companies/ subsidiaries, some involved in production/ sale of the product under consideration.</li> </ul>

has stated that the exporter's response clearly showed the existence of a number of affiliated companies, some involved in the production and sale of the subject product. All

the related companies were required to file the questionnaire response. The exporter has argued that on the one hand, the domestic industry claimed that the subject goods were not available off-the-shelf and on the other, that related companies should file the questionnaire response, when only one company has developed the product to meet the Indian importer's specifications, production and quality control requirements. Hence, the question of supplying material produced in other companies, even if affiliated, did not arise. Further, the companies were located very distant.

#### **D.4 Process of Transformation**

16. The domestic industry has alleged that the company's conversion from collective ownership to private was not transparent in that no settlement took place between the three owners at the time of conversion, that the exporter had not disclosed that the company was not privately owned until recently. The name "Zhangzhou Zhengxing Wheel Factory" indicated that it was a wholly state-owned enterprise. A company held by three persons could not be collectively owned and the response of the exporter could not be relied upon. Besides, there was the issue of contradictions on the legal identity of the company as follows:

Issue	Contradictory claims
Legal identity of the company	<ul style="list-style-type: none"> <li>&gt; The company has all along been owned by 3/5 persons</li> <li>&gt; the company was "collectively owned" earlier and is a private legal entity now</li> </ul>

The exporter has denied suppression of any information about ownership.

#### **D.5 Capacity expansion**

17. The domestic industry has claimed to have expanded their capacity for wheel production including for the subject product, based on an earlier indication by Tata Motors Ltd (hereinafter referred to as TML), which importing company, however, has resorted to dumping threatening idling of capacities set up. TML has refuted this, stating that the size of orders placed with the domestic producers had never been lower than the indicative quantities discussed with them and hence, the statement was factually incorrect.

### **E. DETERMINATION OF DUMPING AND DUMPING MARGINS**

#### **E.1 Market Economy Treatment (MET)**

18. The Authority, noted in its preliminary findings that in the past three years China PR has been treated as a non-market economy country in the anti-dumping investigations by WTO members such as European Union, the United States of America and India. Therefore, in terms of paragraph 8 (2) of Annexure 1 of the Anti Dumping (AD) Rules, China PR was treated as a non-market economy country for the purpose of provisional assessment of the normal value.

19. Paragraph 8, Annexure I to the Rules as amended provides that the presumption of non-market economy against a country can be rebutted by individual exporters for individual treatment if they provide information and sufficient evidence, on the basis of the criteria specified in paragraph 8(3) and prove the contrary. The cooperating exporters/producers of the subject goods from People's Republic of China were asked to furnish necessary information/sufficient evidence as per paragraph 8(3) in response to the MET questionnaire to enable the Authority to consider the following criteria as to whether:-

- a) the decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;
- b) the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
- c) such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and
- d) the exchange rate conversions are carried out at the market rate.

20. Only one manufacturer of the subject goods in China i.e., M/s Zhengxing Group Wheels Company Ltd (ZGWCL) filed their questionnaire response and Market Economy Questionnaire response claiming market economy status and individual treatment.

## **E.2 Views of the interested parties on MET**

21. The domestic industry has argued that rebuttal of the presumption that China PR was a non-market economy country and claiming market economy status (MES) by establishing that individual producer/exporter(s) satisfy the various criteria laid down under the Rules should be on the basis of "*evidence and information*", not mere bald statements. The onus that the company deserved MES rested solely on the exporter. Besides, as per the Accession treaty signed by China before the WTO, only the industry as a whole could claim MES, not individual firms. Even the present legal provisions implied that a claim of MES could be considered only if it was made by producers who were representative of the industry. Hence, MES treatment could not be granted to the responding Chinese producer. All information relevant and necessary to establish that the exporter was operating under market economy environment as below had to be provided.

22. **Legal form of company:** The domestic industry has argued that the exporter has stated that the company was held by three persons all along and was sometime "collectively owned". The exporter has to establish the interplay of market forces and lack of/ insignificant state interference in their economic decisions. Insufficient and misleading information has been provided about past ownership and how a collectively owned enterprise became a private entity. In the absence of proper disclosure, it cannot be concluded that State-owned shares have been sold freely at market price during the process

of transformation. Assets valuation report was only a starting document in the process. The appropriateness of the process of transformation itself had to be examined, whether the company was made available to any interested party or it was decided to hand over ownership to specified individuals and then valuations effected. Such a valuation would not be reliable unless it had been offered in the market.

23. The domestic industry has further stated that the transformation of the company from very small and with a very low capital to one of the largest wheels producers in China over 10 years as well as the large investments of over RMB 110 million made in subsidiaries when possessed of income of less than RMB 10 million was evidence of Govt. support. Besides, the capital employed was enhanced to RMB 90 million, 85% contributed by one person alone, which considering profits in 2004, represented 53 years of profits. Therefore, the source of these funds must be investigated.

24. The exporter has denied the charge of suppressing information. The Authority had been informed of the company having been originally sponsored by the Association but invested by three private individuals. At the time of the company's incorporation, the promoters sought the Association's sponsorship, feeling that a collective form of organization was socially more acceptable to labourers and others. But as the Association was not investing funds, an agreement on funds to be invested by the promoters and their role was entered into with the Association. The investors brought in substantial additional capital and expanded capacity after it became private. The capital and asset base of the company before transformation were insignificant, as seen from the financial statements at the time of conversion and the asset valuation reports. Even if they had benefited under the erstwhile status, the carry-over effects would be negligible considering the current capital and assets base of the company. Further, the WTO law did not require that a transformation from state ownership should be made only by offering it to the public at large and not to specified individuals. In any case, the promoters held the company right from the beginning and only their association with the sponsor was cut off. As regards source of funds, the Authority could examine the same to the extent necessary.

25. **Shareholding beyond 5% -** The domestic industry has demanded that exporter should provide information on companies where they directly/ indirectly held more than 5% shareholding, shareholders with 5 % or more of the company's outstanding voting stock and disclose whether the company was under common control of or controlled another legal entity as well as of affiliation with another company with the potential to manufacture the subject goods. Further, that State interference was not restricted to the "fact of actual interference by the State", but also if the State was legally or operationally "in a position to exercise restraint or direction over the company". The exporter had made contradictory statements by admitting on the one hand, having a number of subsidiaries and on the other, that the company was under no common control with another entity.

26. The exporter has denied any contradictions in their response. Zhengxing was the parent/holding company of the group and they had provided a list of and information on all companies in the group. As the parent company, Zhengxing was not under the control of any other company, but controlled other companies in the group. The criterion for defining affiliated companies under the customs law had no application in anti-dumping.

27. **Identity of shareholders** – The domestic industry has held that information on each shareholder, viz., individual/ company, nationality, legal, operational and organizational structure, ownership pattern and shareholders who made the company collectively owned, etc., was vital. The exporter has claimed that the identity of shareholders had already been provided.

28. **Articles of Association (AOA)**: The domestic industry has charged that the exporter has not made it available, which violated the trade notice with regard to non confidential version. The exporter has claimed that the Articles of Association was not a public document and was confidential, not being susceptible of summarization.

29. **Applicable Chinese laws** – The domestic industry has held that there was no information on these laws in the questionnaire response or that the exporter has followed the laws, despite a request in the petition itself for such information. The exporter has stated that they had already provided the information. The objective of examining the laws was to assess if they provided a reasonable degree of operational freedom, continuity and certainty to enterprises in China without undue governmental interference and an examination if the exporter has complied with the law was unwarranted. Also, the exporter's questionnaire did not seek information about provincial laws; of which none related to areas concerned with company formation and administration relevant for examination in an anti-dumping investigation.

30. **Raw materials and other inputs** - The domestic industry has stated that the exporter has to demonstrate that input prices paid reflect fair market values, as prevailing in the international market and disclose if there was freedom to source inputs (without interference) in response to the market, supplier identity, their legal & operational status, the source of and rate paid for power and details of the power companies. The exporter has countered this demand stating that the contention that 'in response to market signals' had to be considered as the prices prevailing in the international market and not in China was contrary to the express text, that the identity of its raw material suppliers had already been made known, that the actual price of power paid was not lower than those prevailing in many market economy countries and finally that requirement of details of the power companies was uncalled for.

31. **Industrial property rights and legal requirements**- The domestic industry has said that the exporter must indicate product-related contractual links of any kind with other companies/ authorities/ governments on R&D, production, licensing, agreements etc, authorizations required for domestic production and sale, exports, terms, conditions and obligations. The exporter has denied that any authorization was required from any governmental authority for producing/ selling/ exporting the product and has stated that all decisions were made without any State interference.

32. **Bankruptcy & Property Laws, on distribution of profits, repatriation of capital invested, labour policies**: On the domestic industry's demand for information on all these, the exporter has stated that they have already provided the relevant information.

33. The domestic industry has stated that restrictions on production, domestic & export sales, freedom in setting prices which are not State-influenced or set by State-owned/controlled enterprises should be indicated, supported with a complete list of all Chinese steel wheel producers and details of ownership, capacity, production, domestic

and export sales. The exporter has stated that details of other producers to establish State interference in price setting was an impossible demand, as no individual exporter had information about all the other producers in his country. The domestic industry has further argued that OEM customers would demand low prices and the prices of all suppliers to them would be in the same band, so that the supplier would not be able to set prices on its own. This statement has been dismissed by the exporter as lacking merit since when a supplier met the price demands of its customers, it was in response to market signals, which action could not be treated as non-market and prices of different suppliers to an OEM or prices of the same product by one supplier to different OEMs and actions of government and non-government controlled OEMs may vary. Just because big volume customers had a bargaining power in price setting, it could not be held that supplier prices were not reflective of market conditions, as precisely for this reason, prices should be treated as such.

34. **Accounts information-** The domestic industry has demanded that the exporter should provide copies of financial statements, disclose if they were audited and if statutory books of accounts were maintained, in line with GAAP and IAS, accounting rules followed, valuation of assets and if reflected in books of accounts, outstanding loans, their special terms & conditions, source of investments: whether capital additions/ loans, banks' financing policies, loan applications made, terms of and actual repayments. The exporter has stated that they had furnished complete details of their annual audited accounts as per China's GAAP and of investments. The mere fact of huge investments having been made in recent years did not imply govt support and hence, ruled out State interference.

35. The domestic industry has also claimed that Chinese GAAP differed from the international GAAP (IAS), and information required to be disclosed under IAS were not required under Chinese GAAP. Even then, annual reports of Chinese companies did not fully comply with their GAAP. The exporter has claimed that their annual reports fully complied with Chinese GAAP and that the domestic industry has not shown where the difference between the two accounting standards lay.

36. **Foreign Exchange:-** The domestic industry has asked whether the exporter obtained exchange rate as per prevailing market rates in China; regulations impacting the business, to which the exporter has responded that they had already provided information about the exchange rate system followed in China which is primarily market driven. China was a signatory to Article VIII of IMF charter and did not undertake any administrative setting up of exchange rates.

37. The domestic industry has stated that even if one condition was not satisfied, the exporter cannot be granted MES, to which the exporter has claimed that they have provided adequate information and evidence to rebut the presumption of NME.

36. In their comments post-preliminary findings, the exporter has claimed that the Authority had rejected their market economy claim on the ground that raw material prices were significantly lower than the prevailing market rates in China and the international market, and the exporter had so far not established that prices of major inputs substantially reflected market values. In this context, there was no evidence on record which market rate in China and in international markets was considered. Steel had been procured from seven domestic suppliers during the POI, one being state-owned and all details of quantity and value of purchases made had been provided. The actual prices reported reflected the

correct market prices prevailing in China PR during POI. Besides, prices labelled as 'international prices' were designated as FOB or CIF and by definition would be higher than the domestic selling price, so that for comparison, suitable adjustments to the international prices were required, which had not been done. Therefore, the determination that their procurement prices were lower than international prices was without any basis.

39. The domestic industry, on the other hand, has claimed that the Authority's preliminary findings were fully justified as the exporter had provided no evidence to establish that the prices of major inputs substantially reflected market values, so that a vital condition for MES was not satisfied. Though the company had purchased steel from a number of suppliers, mostly private, it did not imply that the supplier prices reflected market values. Barring their own purchase prices, there was no evidence provided. Besides, the Authority had information on domestic prices paid by producers of steel wheels in a number of countries and in China, to state steel prices paid by the exporter are substantially lower compared with the price in China.

40. The domestic industry has further submitted that steel prices had increased in the post-POI by over \$ 60 PMT but the exporter still maintained the same price levels for the subject product, despite the raw material constituting a very significant proportion of total cost, implying operations under non-market economy conditions. Producers in a market economy country would pass on cost increases in the form of higher product prices. The exporter has dismissed these submissions as unsubstantiated and meaningless.

### **E.3 Examination by the Authority**

41. The Authority has noted the arguments of the interested parties. The questionnaire response and Market Economy Response of the Company were examined and an on-spot investigation and verification was carried out in the premises of the exporter.

#### **E.3.1 Salient features emerging from the exporter verification**

42. Zhangzhou Xiangcheng Xiaoxi Automobile Wheel Factory was registered on \*\*\* as "collective enterprise" supervised by Economic United Association of \*\*\* having registered capital of RMB of \*\*\* which was increased to RMB \*\*\* on \*\*\*. On \*\*\*, it became a sole proprietorship, having registered capital of RMB \*\*\*. The Association organized an evaluation and auditing of all assets of the enterprise and the profits were paid to the Association and the principal invested by the investors was repaid to them. The restructured enterprise was solely owned by \*\*\*, one of the original investors. On \*\*\*, Zhangzhou Xiangcheng Zhengxing Automobile Wheel Factory was converted into a joint stock cooperative, having registered capital of RMB \*\*\*. As per business license of \*\*\*, it was registered as "limited liability company" having registered capital of RMB \*\*\*, which was increased from time to time and became RMB \*\*\* during \*\*\*.

43. On being asked why a private individual had to start the company as a collective form of enterprise, the exporter attributed this to the fact that the private individuals did not have land use rights and the investors had to go to the Association to get these. The rights, which were with another company, were transferred to the exporter through an agreement in \*\*\* for a total payment of \*\*\* RMB paid in instalments from \*\*\* to \*\*\*. The Authority noted, however, that the exporter had claimed that a collective form of organization was socially more acceptable to labourers and others.

44. The exporter was asked why in the business licence of \*\*\*, the enterprise was depicted as Zhangzhou Xiangcheng Xiaoxi Automobile Wheel Factory, but in the fund raise agreement of \*\*\* the word "Xiaoxi" was missing. The response was that Zhangzhou and Xiangcheng represented names of geographical locations in China, and the investors had planned to use these names, but at the time of registration, Xiaoxi was included to distinguish it from others likely to be set up in the same location, an inclusion that was itself indicative of private ownership, as it would not have been required of a state-owned enterprise. Xiaoxi was replaced by Zhengxing in \*\*\*.

45. The verification showed that as per the asset evaluation report of \*\*\*, there was a huge revaluation from \*\*\* RMB to \*\*\* RMB when the enterprise was restructured from collectively owned to sole proprietorship through (a) an unexplained re-valuation of inventory by RMB \*\*\*. (b) increase in quantity of wheels, without clarifying if these were the company's own or purchased from others. (c) revaluation of building at RMB \*\*\*, though, as per the books of accounts, there was none. (d) unexplained increase in accounts payable of RMB \*\*\*. The exporter held that some part of the inventory and buildings had not been accounted for prior to revaluation, which admission itself raised doubts on the reliability of the audited accounts. Further, that the increase in net assets after revaluation was only RMB \*\*\*, the rest being the investment by \*\*\* from personal sources. It was found that the total asset value went up by RMB \*\*\*, funded through creditors to the extent of RMB \*\*\*. Besides, the details of financing of the capital base of the sole proprietorship by \*\*\* were not divulged during the verification.

46. The capital base was reduced to RMB \*\*\* in less than a month on conversion from sole proprietorship to a joint stock cooperative and then enhanced to RMB \*\*\* in \*\*\* on further restructuring to a limited liability company. The exporter has denied any special reason why the sole proprietorship was converted in to a limited liability company in two stages, instead of directly, stating that the sole proprietor had the freedom to choose the form of organisation. The enhanced capital base of the limited liability company was contributed in kind of RMB \*\*\* and in cash of RMB \*\*\* (as per the capital verification report of \*\*\*). In a short span of 4 months, as per the capital verification report of \*\*\*, there was an increase in registered capital to RMB \*\*\*, contributed as RMB \*\*\* in cash and RMB \*\*\* in assets. In Jan 2005, \*\*\* contributed physical assets valuing RMB \*\*\*, raising the registered capital of the company to \*\*\*.

47. Further, as per capital verification report of \*\*\*, in \*\*\*, \*\*\* had consigned \*\*\* school to pay RMB \*\*\* into the company's bank account and later paid RMB \*\*\*, thus enhancing the capital contribution to RMB \*\*\*, including assets valued at RMB \*\*\*. The reason for transferring the money through the school was held to be that borrowings from companies could not be directly transferred to the individual private accounts due to limitation on cash withdrawal. Besides, \*\*\* owned the school, too.

48. During the verification, the source of funds from which \*\*\* drew money for investment could not be verified. Subsequently it was said that loans totalling RMB \*\*\* had been taken from \*\*\* to \*\*\*, at \*\*\* interest rates, repayable over \*\*\* years, which transactions did not appear to be of a commercial nature, since there was no annual repayment schedule for the loans in the agreements submitted to the Authority. Instead, there were only fixed dates of repayment.



49. The producer/exporter claimed that there were no controls on export of the subject goods, on production or sale of the subject goods in the domestic market or price controls on domestic or export sales or any export quotas. The raw material, steel, was subject to the system of 'designated trading' whereby only designated enterprises were permitted to import or export steel, but this system was abolished just prior to the POI, as seen from the public notice of 8<sup>th</sup> December, 2004 issued by China's Ministry of Commerce. In addition, the company had stated that they procured local inputs through spot contracts, and enjoyed 17% VAT return on export sales. Profits from exports were distributed among shareholders after the obligatory statutory and discretionary requirements were met.

50. During the plant visit, the production process for the manufacture of the subject product was seen. For the manufacture of steel coins, HR coils were used and from end 2004, steel coins were punched using an asymmetric multiple-punching process, for which, the company itself designed and developed a new shearing machine. For the manufacture of steel rim, the company purchased steel profiles of varying thickness at different points for conversion into rims and slotted angles for manufacturing rings. Finally, the steel disc, rim and ring were welded / assembled together to make the wheel. A cross section diagram of the rim profile and engineering drawings of disc, rim and ring were produced. Consequently, consumption norms and wastage were held to be lower.

51. The company was asked why there was no fund outflow towards repayment of loans of one year duration in the cash flow statement, to which they replied that they applied for extensions with the bank for loans due within the year. Thereafter, the company was requested to provide details of credit policy and applications for grant of short term loans and on their deployment. Though these were not furnished during the verification, they were made available subsequently.

52. During verification, the reasons for the exponential growth in current liabilities of the company since 2003, and particularly during the POI, could not be explained. The exporter held the growth to be commensurate with the growth in the volume of business and that the current ratio had reduced during 2005 compared to the previous year and all their activities were fully disclosed in the financial statements.

53. Details on \*\*\* of the notes payable to and \*\*\* of current assets receivable from a subsidiary in \*\*\*, could not be furnished. The exporter stated that in the annual accounts, by error, notes payable to the subsidiary had been shown as for purchase of goods, but the explanation did not tally with the audited annual accounts.

54. The company could not furnish supporting evidence during the verification that the actual steel price paid by them or prevailing in China were reflective of international prices, a requirement that was very critical for grant of MET. Later, details of the international steel price from UN-COMTRADE were made available to prove that Chinese steel price was fairly close to the international price. These prices pertained to flat rolled products based on the data of a single country and ranged from \$0.378/ kg to 0.677 /kg, which rendered them unacceptable.

55. In view of the foregoing, the Authority conclude that the company costs and prices are significantly distorted due to carry-over effects from the erstwhile non-market economy system and therefore, do not qualify for consideration for the purpose of

determination of normal value of this company. Accordingly, the Authority proceeds to determine the normal value for this exporter in terms of para 7 of annexure I to the Rules.

### **E.3.2 Consideration of a surrogate market economy country**

56. Para 7 of Annex 1 to the Rules provides that In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis of the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin. An appropriate market economy third country shall be selected by the designated authority in a reasonable manner, "keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question, and due account shall be taken of any reliable information made available at the time for selection. Accounts shall be taken within time limits, where appropriate, of the investigation made in any similar matter in respect of any other market economy third country. The parties to the investigation shall be informed without any unreasonable delay the aforesaid selection of the market economy third country and shall be given a reasonable period of time to offer their comments.

57. In the initiation notification, the interested parties were intimated that the domestic industry had suggested that in view of non-market economy situation in China, Germany should be considered as the appropriate market economy third country for the purpose of determination of normal value and evidence on price of the subject goods therein during the period of investigation had been furnished. Alternatively, the domestic industry had determined normal value as the price payable in India, considering the cost of production in India, duly adjusted to include selling, general and administrative expenses and reasonable profit.

58. TML had opposed the choice of Germany as an appropriate market economy country at the outset on the ground that it violates the statutory principle for selection of such a third country enjoined in para 7 of Annexure 1 of the Rules. TML also opposed the alternative suggestion of using the cost of production in India for the like product, stating that para 7 provided for basing normal value on the price actually paid or payable in India for the like product with due adjustments for a reasonable profit margin. No other interested party submitted any comments or names of the producers/exporters in analogue countries willing to submit the data to the Authority.

59. The domestic industry then proposed Turkey as an alternative market economy country to Germany citing comparability to the Chinese product, willingness of the Turkish producer to co-operate and the consideration of Turkey as a surrogate country for China by the European Commission in several investigations. However, the exporter held that the comparison would be inappropriate, given the insignificant domestic sales in Turkey, the lack of customization of the Turkish product to the requirements of the Indian importer, the inadequate skeletal data provided, the relationship with the domestic industry and the likelihood of selective data distorting results.

60. Taking due note of all arguments by the interested parties and keeping in view the differential levels of economic development and the level of development of the subject product, the Authority rejected the choice of Turkey as a surrogate market economy

country and proceeds to construct normal value on the basis of cost of production in India.

### **E.3.3 Construction of Normal Value**

61. In formulating the preliminary findings in the case, the Authority had considered it appropriate to use wheel size and weight as essential product parameters for the purpose of comparison between the normal value and export price, as these parameters had been identified by both the domestic industry and the exporter. Accordingly, the normal value had been constructed taking into account the cost of production in India, duly adjusted to reflect international raw material prices and optimum conversion costs, selling, general & administrative expenses and reasonable profit.

#### **E.3.3.1 Views of the interested parties**

62. In the post-preliminary submissions, the exporter has contended that this construction was incorrect as the Authority has used the consumption norms of the Indian domestic industry to arrive at the raw material costs, though they had submitted details of their actual consumption for different sizes of wheels exported to India, which should have used. The actual quantity of raw materials consumed depended upon the production process and efficiency of the manufacturer and the consumption by the domestic industry was significantly higher than the exporter's. Besides, the details of international prices and profit margin adopted in determining the normal value should not be kept under wraps

63. The domestic industry has justified the findings of the Authority, stating that it had not been established that the consumption norms of the exporter had been correctly worked out, as the exporter had made several contradictory claims and even the basic raw material has not been correctly identified, so that the consumption norms claimed could not be admitted. Besides, variation in consumption norms can at best arise out of the production process, not on efficiency. They claimed that the domestic industry's consumption norms were realistic, but those of the exporter were understated and vital information had been suppressed. Further, estimated conversion costs for the production of the subject product could not be lower than US \$ 300 PMT, excluding raw material costs.

64. The exporter had provided details of the international steel price from UN-COMTRADE to prove that Chinese steel price was fairly close to the international price, pertaining to flat rolled products based on the data of a single country, which ranged from \$0.378/ kg to 0.677 /kg. The Authority had rejected this data as it pertained to only one country's export trade data and the Authority had relied on an alternative data base. In their post-disclosure comments, the domestic industry supported the Authority's rejection of the UN-COMTRADE data on the grounds of the nature of the product and significant variation in steel prices with thickness and grade. The exporter, however, disagreed with the Authority's rejection of the aforesaid data base. The position has been re-examined and the Authority re-visited the UN-COMTRADE data base and collected export data pertaining to major market economy countries (as against the single country data provided by the exporter) and re-worked the dumping margin relying on the said database.

65. Thus, the Authority constructed the Normal Value, based on the international steel price of flat rolled products, the actual consumption norms of the exporter, and the conversion costs, selling, general and administrative expenses of the most efficient domestic producer, with a reasonable margin (5%) of profit. The normal value has been constructed for each grade and the weighted average constructed normal value then determined. The constructed normal value thus works out as Rs \*\*\* per kg.

### E.3.4 Export Prices

#### a) For the co-operating exporter

66. The export price as indicated by the exporter has been adopted in each grade with suitable modification for conversion of number to weight. A weighted average export price to India has been determined for the subject product. Price adjustments claimed on account of adjustments like freight and bank charges have been allowed. The weighted average export price has been taken as US \$ \*\*\* PMT and adjusting for inland freight and bank charges, the ex-factory export price for the co-operating exporter comes to \$ \*\*\*.PMT or Rs \*\*\* per kg.

#### b) For others

67. The lowest export price of the co-operating exporter has been adjusted for obtaining the export price for other producer/exporter(s). The adjusted export price for others works out to Rs. \*\*\* per kg.

### E.3.5 Dumping Margins

#### a) For the co-operating exporter

68. The Authority has worked out the dumping margin for the co-operating exporter by making a comparison between the normal value and export prices at ex-factory level, based on the weighted average of the grade-wise constructed normal value and the export prices determined for the product. The weighted average overall dumping margin thus determined is seen to be significant.

#### b) For others

69. For the other exporters, the weighted average constructed normal value and the lowest export price has been taken and the dumping margin computed. This is as shown below:-

	in Rs / kg			
Grade	6.0-16	7.0-20	7.5-20	Wtd avg
<b>Zhengxing</b>				
Quantity	***	***	***	***
Constructed NV	***	***	***	***
Export Price	***	***	***	***
Dumping margin	***	***	***	***
Dumping margin %	35-45%	35-45%	50-60%	50-60%

<b>Others</b>		
Constructed NV		***
Export Price		***
Dumping margin		***
Dumping margin %		70-80%

Source: Exporter, DGAD.

70. The dumping margin determined is significant and above de minimis.

## F. INJURY DETERMINATION

### F.1 Views of the interested parties

71. The domestic industry has submitted that a product like wheels is a critical safety item for a vehicle and takes around 6-12 months for development and production. It requires preliminary design, customer approval, testing of stress analysis, tooling development and testing in-house as well as by the certifying authorities and customers. Therefore, it is infeasible to immediately replace loss of business due to imports in a short time. Though market development was an on-going process for all products, to look for alternate avenues for the subject product was not feasible, given its limited demand in the export market. Dumping by the Chinese producers has severely undermined the efforts of the domestic industry.

72. In its post-preliminary findings, the exporter has claimed that the injury determination in the findings was highly skewed and did not appear to be objective. The findings revolved around two basic parameters of injury. The first parameter was that volume of imports have increased while production and sales volumes of the domestic industry have come down during POI as compared to the previous year 2004-05. The exporter contended that when there were no imports of wheels into India earlier, any import would necessarily show reduction in the market share of the domestic industry. Under such circumstances, fall in market share would not necessarily indicate injury to the domestic industry. In terms of actual sales, domestic industry has recorded an increase as shown below:

	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Sale by domestic industry (DI)	52702	70757	88560	80817
Variation in the sales of DI				
a) During POI over 2004-05				-7743
b) During POI over 2003-04				10060

Compared to 2003-04, domestic sales had increased by 10060 units during POI, though it is less by 7743 units compared to 2004-05.

73. To the argument advanced by the exporter, the domestic industry has responded that the fact that imports increased from 0% to 18.26% in a short period established the extent of injury. The European Commission considered even a 1% increase in market share significant, even if Indian law had no similar legal provision. Besides, while the share of imports in demand increased, sales and market share of the domestic industry declined and that too, in a situation of rising demand. Moreover, evaluation of economic

parameters had to be done in the context of the dumped imports, which started primarily in the POI. Hence, any meaningful comparison would be at best with the preceding year when there were no imports. When the domestic sales volumes improved up to 2004-05, their drastic fall in the POI, when they should have increased, given the increased demand was the presence of dumped imports. In any event, the European Commission held that to establish existence of injury to the domestic industry, *inter-alia*, the preceding years and the developments and trends found between them and the POI serve as reference, rather than an end-point to end-point analysis.

74. The second parameter of injury was that the domestic industry suffered a loss during POI compared to 2004-05 despite increase in selling prices. The exporter has contended that the domestic industry had a loss of 45 units during POI compared to a loss of 100 units during 2002-03 and yet they claimed injury due to dumped imports.

					Variation in POI vis-à-vis	
	2002-3	2003-4	2004-5	POI	2003-4	2004-5
Cost of Prodn	100	101	115	126	25	11
Selling Price	100	104	120	129	25	-104
Profit/Loss	(100)	-2	72	-45	-43	-117

The table showed that while both costs and selling prices increased by 25 units during POI as compared to 2003-04, losses have mounted during POI. Further, costs increased by 11 % points during POI over 2004-05 while sales prices increased by 9 % points. A mere 2 % increase in costs could not have lead to a change in the loss of 117 % points. Hence, the only conclusion possible was that the domestic industry's method of determining profits/ losses has not been consistent and they have changed their method during POI to show unduly high loss.

75. The exporter further argued that cash profit had come down from 221 in 2003-04 to 184 during POI, so that it appeared that the domestic industry might have included certain fixed assets which they had not yet put to use for claiming depreciation during POI.

76. The exporter has claimed that the prices of both the Indian producers were almost equal and their order book position enviable, so that just because they earned a cumulative loss, it could not be attributed to imports from China. The domestic industry has responded that the order book position as reflected in sales volumes was falling and hence, the cumulative losses were more attributable to dumped imports.

77. The exporter has also alleged that even with lower capacity utilization, domestic industry was unable to deliver on agreed schedules and customers had often to wait before deliveries were made. The domestic industry has refuted inability to deliver on schedule and has stated that contrarily, in the subject product which had well-laid down production and procurement schedules of consumers, it was the consumers who had turned to ad-hoc placement and cancellation of orders.

78. TML held that the contention of injury to the domestic industry was incorrect as the domestic selling price was above the non-injurious price (NIP). The constructed normal value based on the petitioners' costs of Rs.46.65 per kg or Rs. 2100 per set was

also the NIP since it took into account actual cost of production plus 5% profit margin. During the POI, TML purchased about 6.6 lakhs wheel sets of specification 7.5-20 from the domestic industry at an average price of Rs.2327.10, which was at the NIP adjusted for basic customs duty for raw materials. Absence of injury was corroborated from the indexed profits during the POI being 44% higher than in the base year 2002-03 and though lower in the POI compared to 2004-05, they were still adequate from the perspective of the NIP. In addition, as net sales realisation was close to the NIP, the domestic industry was not injured. Besides, the constructed normal value which depicted a healthy dumping margin would be lower if domestic industry's actual costs were verified and correctly determined. The industry appeared to have realized a price equal to or greater than the NIP and hence has suffered no injury.

## **F.2 Examination by the Authority:**

79. The Authority has noted the views expressed by the interested parties in respect of the injury claims of the domestic industry and proceeds to examine the issues raised and injury claims of the domestic industry as follows:

### **F.2.1 Examination of Injury**

80. Rule 11 of Antidumping Rules read with Annexure –II provides that a determination of injury shall involve an objective examination of both (a) the volume of the dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for like article and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. Further, while examining the volume of dumped imports, the Authority “shall consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. With regard to the effect of the dumped imports on prices ...the designated authority shall consider whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree”. The Rules further provide that “the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.”

81. For the purpose of injury analysis, the Authority has examined the volume and price effects of dumped imports on the subject goods on the domestic industry and its effect on the prices and profitability. To examine the existence of injury and causal links between dumping and injury, if any, since positive dumping margin has been established for the exports from the subject country, entire exports from the subject country has been treated as dumped imports for the purpose of injury analysis and causal link examination.

**F.2.1.1 Volume Effect of Dumped Imports: Import volumes and market shares****a) Import Volumes**

82. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India.

83. The domestic industry has submitted the import data compiled from IBIS data source, which shows that imports have taken place from only the subject country and during the second half of injury investigation period and has also claimed that the product has been reported under customs classifications 8708.7000 and 8708.9100. DGCIS transaction-wise import data has also been obtained for examination. The domestic industry claim that both these sources understate the quantity of dumped imports, basing this statement on the production data of vehicles in the period of investigation reported by the Society of Automotive Manufacturers (SIAM) and have assessed imports at 18405 MT.

84. Examination of DGCIS data as well as the data reported by the cooperating exporter indicate that the DGCIS has underreported the import data of the POI to a very large extent. The cooperating exporter and importer has reported significantly higher quantities of exports during the POI compared to imports reported by DGCIS as shown in the tables below:.

**Summary data from secondary sources**

<b>Wheels imports, 2005</b>	<b>Volume (MT)</b>	<b>Value (Rs. Lacs)</b>	<b>Avg price (Rs/kg)</b>
DGCI&S	9245.65	3653.46	39.52
IBIS	7399.60	2605.67	35.21

Source: DGCIS, domestic industry.

**Data from the exporter and importer**

As per exporter	<b>Grade</b>	<b>2004-05</b>	<b>POI</b>
		<b>Indexed</b>	<b>Indexed</b>
	6.00-16"	0.02	18.17
	7.00-20"	0.01	0.98
	7.50-20"	16.23	213.93
	Total	16.26	233.08
As per importer	16" rim	-	2.50
	20" rim	4.14	97.50
	Total	4.14	100

Note: \*: Computed, based on weight of the wheel indicated by exporter as: (a) 6.0-16": 20.5 kgs; (b) 7.0-20": 40 kgs; (c) 7.5-20": 47 kgs.

85. Therefore, for the purpose of injury analysis, the import volumes as reported by the cooperating exporter have been used as follows:



Parameter (in MT)	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Total Imports			***	***
Imports from China			***	***
Indexed			100	1489
Market share of Chinese imports (%)			100	100
Total sales of domestic industry	52702	70757	88560	80818
Demand (indexed)	100	134	171	191
Share of Chinese imports in demand (%)			1.49	19.75
Production of domestic industry	***	***	***	***
Chinese imports relative to production			1.50	24.44

Source: Domestic industry, exporter.

The Authority noted that the imports increased in absolute terms from the subject country from just \*\*\* MT in 2004-05 to \*\*\* MT in the period of investigation (POI). Further, relative to the domestic demand, the imports from the subject country increased from 1.49% in 2004-05 to 19.75% in the POI, while relative to domestic industry's production, they increased from 1.50% to 24.44% respectively. Moreover, while the share of Chinese imports in demand increased in 2005 to 19.75%, the domestic industry's share declined correspondingly. In view of this and there being no other domestic producer in India, the Authority concludes that the dumped imports from the subject country show adverse volume effect.

86. The decline in the market share of the domestic industry is also observed when considering the quarter-wise purchases of the product made by TML, a major consumer of the subject product from the domestic industry as below:

Quarter	Qty Indexed, value in Rs. lakhs					
	20" rim			16" rim		
	TML purchases from DI		Exports	TML purchases from DI		Exports
	Qty	Value	Qty	Qty	Value	Qty
Jul-Sep 04	238	***		67	***	
Oct-Dec 04	312	***		83	***	
Jan-Mar 05	310	***	14.62	94	***	0.02
Apr-Jun 05	197	***	53.13	72	***	---
Jul-Sep 05	121	***	76.68	76	***	5.07
Oct-Dec 05	151	***	70.49	70	***	13.08

Source: Importer, exporter.

87. The Authority noted that purchases of 20" rim wheels by TML from the domestic industry of about \*\*\* pieces in the 4<sup>th</sup> quarter of 2004 fell to \*\*\* pieces in 2<sup>nd</sup> quarter of 2005, while in the 16" rim segment, TML purchases of about \*\*\* pieces in the 1<sup>st</sup> quarter of 2005 plummeted in the 2<sup>nd</sup> quarter. Further, imports were more in the 20" rim segment than the 16" rim, soaring from a modest \*\*\* pieces in the 1<sup>st</sup> quarter of 2005 to almost \*\*\* pieces in the 3<sup>rd</sup> quarter.

**b) Actual and potential effects on capacity, output and capacity utilization of the domestic industry**

88. The performance of the domestic industry has been examined with reference to its capacity, output, capacity utilization and impact of dumped imports on these parameters, if any.

Parameter	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Capacity in No. ('000)	2380	2380	2724	2724
Indexed	100	100	114	114
Production in No. ('000)	***	***	***	***
Indexed	100	131	162	157
Capacity Utilization (%)	***	***	***	***
Indexed	100	131	142	137
Domestic Demand (MT)	***	***	***	***
Indexed	100	134	171	191

Note: Being multi-product plants, capacity and production are shown in numbers to compute capacity utilization.

Source: Domestic industry.

The domestic industry increased its installed capacity in 2004-05, but capacity utilisation has declined in POI as production declined. The industry has submitted that though they were exploring alternative markets, the process of developing new market was elaborate and time-consuming, and even then, the gap created by the loss of home market business would be difficult to fill. Besides, at present only TML has begun importing from the subject country, but the continuation of the trend would result in others following suit, in which case, they would have to close down capacities for the production of the product. They submitted that capacity expansion effected in 2004-05 in anticipation of demand, on the basis of the importer's indication, has been rendered of no utility due to resort to imports and attempts made to redeploy un-unutilized capacity of component production lines for the subject product to manufacture components for other products adversely affected profitability. The Authority noted that demand has been consistently increasing, but the increase was being met by rising imports, rather than increased domestic production.

**c) Actual and potential effect on sales and market share of the domestic industry:**

89. The volume of domestic sales and effects of dumped imports on the domestic sales have been examined in terms of absolute sales of the domestic industry, demand and market shares. For calculation of the domestic demand of the subject goods, the Authority added the sales volume of the domestic industry to the total imports into India, relying upon the exporter data for the purpose of import statistics on the quantity and price of the subject goods. Sales volume of the domestic industry (DI) has been as under:

Volume (in MT)	2002-03	2003-04	2004-05	POI
DI- Domestic Sales	52702	70757	88560	80818

Indexed	100	134	168	153
Imports from Subject country			***	***
Indexed (2004-05 = 100)			100	1489
Domestic Demand	***	***	***	***
Indexed	100	134	171	191
% share of DI in demand	100%	100%	98.51%	80.25%

Source: Domestic industry, exporter.

90. The sales volume of the domestic industry has increased till 2004-05 and then declined in the POI, although concurrently there has been a consistent increase in demand for the subject goods in India of about 91% in the POI. However, the domestic industry did not benefit from this increased demand, as seen by the loss of its market share by about 20% due to imports from the subject country, which increased by almost 1400%. The Authority has taken cognizance of the fact that the subject product was in use only in very few countries in the world and requirements were limited, so that dedicated capacities created could not be redeployed effectively nor the gap created by dumped imports bridged by exports.

91. The foregoing analysis shows that the dumped imports from the subject countries have increased in absolute terms as also relative to imports into India and production and consumption in India.

#### **F.2.1.2 Price effect of dumped imports**

92. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

##### **a) Price undercutting and Price underselling**

93. The net sales realization of the domestic industry has been determined considering selling price, excluding taxes & duties, rebates, discounts & commissions and freight & transportation. Landed price of imports has been determined considering weighted average CIF import price, with 1% landing charges and applicable basic customs duty. The net sales realization of the domestic industry was compared with the landed value of the dumped imports to examine whether the dumped imports have significant price undercutting effect on the domestic industry.

94. For the purpose of price underselling analysis, the non-injurious price of the domestic industry has been determined taking in to account verified cost and SGA expenses of the industry with a reasonable profit margin. The landed value of dumped imports was also compared with the non-injurious prices of the subject goods to determine the price underselling effect of the dumped imports as follows:

Parameter (Rs. /kg)	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Landed Price			38.09	39.71
Net Sales Realization of Domestic industry	***	***	***	***
Price undercutting <sup>1</sup>			***	***
Price undercutting %			15-25	15-25
Non-injurious price (NIP)				***
Price under-selling <sup>2</sup>				***
Price under-selling %				30-40

Note: <sup>1</sup> NSR minus landed price of imports; <sup>2</sup> NIP minus landed value

Source: Domestic industry, importer.

95. The Authority noted that the landed value of imports from the subject country has been significantly below the net sales realization of the domestic industry resulting in significant price undercutting. Further, the non-injurious price for the domestic industry in the POI was Rs \*\*\* per kg, against which the landed value was Rs. 39.71 per kg, indicating significant price under-selling suffered by the domestic industry.

#### b) Price suppression and depression

96. To examine the price suppression effect of the dumped imports on the domestic prices, the trend of net sales realization of the domestic industry has been compared with the cost of sales. The domestic industry has claimed that since the input cost was arising, the industry was prevented from effecting price increases as imports were suppressing their prices. From the table below, it is observed that though both cost of sales and NSR of the subject goods increased in the POI, the increase in sales realization has been significantly lower than that in the cost of sales, so that full recovery of costs could not be made. However, there is no price depression as yet.

Parameter (Rs/kg)	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Cost of Sales of the domestic industry	***	***	***	***
Indexed	100	101	115	126
Net Sales Realization	***	***	***	***
Indexed	100	104	120	130
Landed Value of Chinese imports			38.09	39.71
Indexed			100	104

Source: Domestic industry, importer.

97. The above analysis indicates that landed price of imports from the subject countries have been significantly below the net sales realization and non-injurious price of the domestic industry, thus resulting in significant price undercutting and price underselling and price suppression..

#### F.2.2 Examination of other injury factors

98. Some of the injury factors i.e. actual and potential decline capacity, production, capacity utilization, sales and market shares; were examined in the previous section along with actual and potential increase in volume of imports and it was noted that

- ❖ Production and sales of the domestic industry for the domestic market has decreased in the POI after showing significant increase upto 2004-05 in spite of the increase in the domestic demand. The domestic industry has been prevented from increasing the production to the extent it could, in spite of good demand in the domestic market.
- ❖ While the domestic industry has increased the capacity to produce and sell the subject goods in the domestic market, it has not been able to utilize the capacities adequately.
- ❖ Sales of the domestic industry decreased substantially after healthy growth upto 2004-05, which also resulted in declining the market share of the domestic industry. The domestic industry has not benefited from the increase in demand.

#### a) Actual and potential effects on profits

99. Profitability position of the domestic industry has been as under:

Parameter (in Rs. Lakhs)	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Cost of Sales of the DI	***	***	***	***
Selling price of the DI	***	***	***	***
Profit/Loss (Rs./Kg). <sup>1</sup>	***	***	***	***
Indexed	(100)	(2)	72	(46)
Profit/Loss on Domestic sales	***	***	***	***
Indexed	(100)	(2)	121	(68)
Interest	***	***	***	***
Indexed	100	62	74	99
PBIT	***	***	***	***
Indexed	100	183	469	161

Note: <sup>1</sup> Selling Price – Cost of Sales

Source: Domestic industry.

The Authority has observed that while the performance of the domestic industry had improved till 2004-05, it deteriorated steeply in the POI. Intensified dumping of the subject product in the POI impacted the financial parameters of the domestic industry. As for the exporter's contention that the domestic industry's method of determining losses, which were unduly high in the POI, was inconsistent, the Authority found that the increase in the cost of sales and selling prices in the POI compared to 2003-04 were 24.71% and 23.69% respectively. This resulted in cost under-recovery of 1.02%, which coupled with the higher volume of sales in the POI, lead to increase in the quantum of loss.

#### b) Actual and potential effects on Employment and wages

100. Employment level of the domestic industry has been as under:

Parameter	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Employees (No:)	***	***	***	***
Indexed	100	124	128	130
Wages (Rs. Lakhs)	***	***	***	***
Indexed	100	118	122	138
Production (MT)	***	***	***	***
Wages/ unit of production	3.89	3.54	2.77	3.41

Source: Domestic industry.

The Authority noted that the employment level of the domestic industry has remained fairly stable from 2003-04. The domestic industry being multi-product companies, employment levels per se may not be a conclusive indicator of injury. The domestic industry has submitted that though the deleterious effects of dumping are not visible so far, sustained dumping would have a significant adverse impact. A constituent of the domestic industry had to re-deploy employees from the production of the subject product to that of other products. The Authority also noted that wages of the domestic industry in absolute terms had increased and that simultaneously, domestic production has also increased resulting in reduction of wages per unit of production. Therefore, this parameter is not a cause of injury to the domestic industry.

#### c) Actual and potential effects on productivity

101. The productivity of the domestic industry is given in the table below. The Authority noted that productivity and sales per employee of the domestic industry, has been increasing till 2004-05, after which both these parameters declined. Thus, there is evidence of injury in the POI which can be attributed to the dumped imports.

Parameter	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Production (MT)	***	***	***	***
Productivity per Employee	***	***	***	***
Indexed	100	107	146	129
Domestic Sales (Rs. Lakhs)	***	***	***	***
Indexed	100	140	201	197
Sales per Employee (in Rs)	***	***	***	***
Indexed	100	112	169	158

Source: Domestic industry.

#### d) Actual and potential effects on Cash Flow, Profits and Return on Investment

102. All the constituents of the domestic industry are multi product companies; therefore, examination of cash flow of the entire company may not be appropriate for the injury purposes. The Authority therefore, has examined cash profit situation of the domestic industry, capital employed and return on investments

Parameter (in Rs. Lakhs)	2002-03	2003-04	2004-05	POI
PBT	***	***	***	***
Indexed	(100)	(2)	121	(68)
Depreciation	***	***	***	***
Cash profit	***	***	***	***
Indexed	100	221	374	184
PBIT	***	***	***	***
Indexed	100	183	469	161
Capital Employed (NFA)	***	***	***	***
Indexed	100	109	142	142
Return on capital empl (NFA) (%)	***	***	***	***
Indexed	100	168	331	113

Source: Domestic industry.

It is observed that from a position of loss of Rs \*\*\* in 2002-03, the domestic industry reduced the loss significantly the next year. In 2004-05, which marked a turnaround, the domestic industry made profits of Rs \*\*\*, which again deteriorated in to a loss in the POI of Rs \*\*\* indicating significant deterioration compared to 2004-05 and even 2003-04. The cash profit situation of domestic industry, which had consistently improved up to 2004-05, deteriorated during the period of investigation, due to the increased depreciation and interest costs arising from capacity addition. Return on capital employed improved till 2004-05, but declined steeply in the POI.

#### e) Inventories

103. Inventories position with the domestic industry has been as under:

Parameter (in MT)	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Average stock of inventory	***	***	***	***
Indexed	100	124	116	173
Sales volume	52702	70757	88560	80818

Source: Domestic industry.

The Authority noted that the sales volume of the domestic industry declined in the POI after increasing up to 2004-05. Inventories have remained a small percentage of sales as the product is made to order and effort to avoid lock-in of working capital is consciously adopted by the domestic industry. This parameter is being ignored for injury analysis in view of the industry's submission of production made-to-order.

#### f) Ability to raise capital

104. No evidence has been placed before the Designated Authority to substantiate the fact that the domestic industry has been facing problems with regards to the ability to raise capital.

**g) Growth**

105. The Authority notes that though there is a healthy growth in demand the performance of the domestic industry in terms of parameters, such as production, sales, market share, profits, cash flow and return on investments shows significant decline.

**h) Degree of dumping margin**

106. The Authority notes that dumping margins from the subject country, as an indicator of injury, has been found to be significant and above de minimis.

**F.2.3 Overall assessment**

107. The above analysis of the factors shows that in spite of the good demand in the domestic market, the industry suffers injury on account of decline in production, sales; low net sales realization; higher inventory build-up; declining return on investments and profits. Majority of the injury parameters have been adversely affected in the POI after improving up to 2004-05 and are showing negative growth. Imports resulted in significant price undercutting and the domestic industry suffered price suppression and price underselling. The injury suffered is material and significant. Therefore, the arguments of the interested parties that the petitioner domestic industry does not suffer any material injury are not valid.

**F.3 Threat of injury**

108. The domestic industry has submitted that the continuing imports of the product from the subject country posed threat of material injury to it in the following ways:

- (i) Increase in imports in absolute terms has reduced their market share.
- (ii) The potential increase in imports is greater in view of lower prices offered by the exporter, resulting in increased orders placed on the exporter.
- (iii) The product demand has consistently increased and as it is not available off-the-shelf, supply orders have to be placed well in advance.
- (iv) Significant price undercutting would prompt consumers to increase the off-take from the foreign producer(s) or force the domestic industry to reduce prices.
- (v) Capacities created by exporters in their home country exceed home market demand.

109. In their post-preliminary findings, the exporter has stated that no information furnished by domestic industry regarding threat of injury. Anti-dumping rules provided that a determination of threat of material injury shall be based on facts and not merely on conjectures or surmises. As in their written submissions, the domestic industry has not provided any evidence or data in their support, such unsubstantiated allegations should be rejected

110. The domestic industry, however, has reaffirmed their fears of threat of injury, holding that the rate at which imports have grown is phenomenal. Besides, as the product is an OEM product with consumers well aware of the cost advantages, they had reason to believe that the consumer would increasingly switch over to the imported product, as



established by the post-POI facts, with imports coming in at prices that would have a significant depressing/ suppressing effect on domestic prices, and further increase demand for imports. The loss in sales revenue due to price under-cutting has been computed to be substantial. The domestic industry has further claimed that the fact that Chinese producers were holding huge surplus capacities was established by the rate at which TML and other Indian producers have placed orders for the imported product, which reinforced the threat continued unchecked dumping was likely to cause. TML have gradually increased off-take to 65,000 wheels a month, which would increase in near future to 100,000 wheels a month, equivalent to over 55-60% of its requirement and post-POI events confirmed imports by other Indian producers. Therefore, if the dumping was allowed to continue, the situation would lead to closure of Indian plants. In addition, the domestic industry has held that where the product imported by naturally price-conscious OEMs undercut the domestic prices by 21%, and were required on a long term basis, threat was not a conjecture, but a business reality. The exporter has dismissed these fears as highly speculative, baseless and being post-POI occurrences, as irrelevant to the case.

111. The domestic industry has submitted that the consumers of the subject project should disclose when they first decided to source the subject product from the subject country, details of their internal decisions leading to that decision, volume and price advantages in sourcing from China and the period for sourcing, as such disclosures would reveal their long-term business plans to source the subject product. The exporter has dismissed this demand as uncalled for and irrelevant and a tool to collect market intelligence from its customers.

#### **F.4. Conclusions on injury**

112. The Authority noted that there has been both volume and price effects of dumped imports from the subject country. Sub-optimal increase in respect of parameters in period of investigation, such as production (30% lower than increase in demand), capacity utilization (lower than optimum), slump in profits in POI, decline in market share (19.75%), positive price undercutting, low levels of return on capital employed, significant dumping margin, negative growth in a number of parameters show significant deterioration in the performance of the domestic industry. Parameters such as employment and wages do not reflect injury. On the basis of the above analysis, the Authority concludes that the domestic industry has suffered material injury.

#### **G CAUSAL LINK**

113. Existence of material injury and volume and price effects of dumped imports on the prices of the domestic industry have been confirmed in the previous section. However, on issues of non-attribution, the mandatory factors have been examined as follows

- ❖ **Contraction in Demand:** - Demand for the subject goods have increased substantially during the injury examination period. Therefore, possible contraction in demand cannot be attributed to the injury to the domestic industry.
- ❖ **Pattern of consumption:** - No significant change in the pattern of consumption has been alleged by any interested party.

4315 En/27-9

- ❖ **Imports from other countries-** Total subject product imports originating in countries other than the subject country are nil and therefore, they are considered not to have had any impact on the domestic industry.
- ❖ **Conditions of competition:** - The goods are freely importable. The petitioners are the only producers of the subject goods. Therefore, domestic competition could not be attributed to the injury to the domestic industry.
- ❖ **Developments in technology:-** There is no allegation of significant changes in technology which could have caused injury to the domestic industry.
- ❖ **Export performance of the domestic industry-** The domestic industry's exports during the injury period formed a very insignificant part of their total sales. The performance of various economic indicators has been determined with respect to domestic sales only. Hence, the Authority holds that material injury suffered by the domestic industry may not as a result of the export performance of the domestic industry.

Exports	2002-03	2003-04	2004-05	POI
In MT	***	***	***	***
Indexed	100	187	140	223

114. The domestic industry has submitted that the improvement in their performance up to 2004-05 in the absence of imports and deterioration in the POI in the presence of imports establishes both injury to the domestic industry and causal link between dumped imports and injury to the domestic industry. The imports from subject country increased in absolute terms, resulting in increase in market share of imports and loss of domestic industry market share. Profitability started declining due to price undercutting and price underselling caused by the dumped imports and they were prevented from effecting legitimate price increases. Besides, the decline in market share of domestic industry prevented them from increasing their sales volumes and production, leading to decline in capacity utilization and thereby hampering growth, even as demand increased. Thus injury to the domestic industry has evidently been caused by the dumped imports.

#### F.1 Factors establishing causal link

115. Examination of the performance of the domestic industry over the injury period shows that the performance of the domestic industry has materially deteriorated due to dumped imports from the subject country. The increase in the volume of dumped imports resulted in significant decline in market share of the domestic industry, prevented increase in sales commensurate with the increase in the demand in the market and affected growth in production, sales and capacity utilization of the domestic industry. The dumped import prices and consequently the landed price of imports from the subject countries resulted in significant price undercutting and price underselling. Price undercutting has resulted in significant erosion in the market share of the domestic industry and reduction in absolute volume of sales of the domestic industry. It is also seen that the price pressure of the dumped imports has prevented the domestic industry from increasing its prices to recover its cost of production, increasing its sales volume and realizing its full capacity in spite of a very healthy demand situation in the domestic

market. Resultantly, profits, cash flow and return on investment of the domestic industry deteriorated in the POI after showing consistent improvement.

116. The above non-attribution analysis shows that the dumped imports from the subject countries, through their volume and price effects, have caused significant injury to the domestic industry. The Authority, therefore, conclude that the injury caused to the domestic industry on account of such dumped imports from the subject countries is significant and material.

#### H. MAGNITUDE OF INJURY AND INJURY MARGIN

117. The Authority has determined the non-injurious price for the domestic industry taking into account the cost of production and other associated costs of the domestic producer during the POI taking into account the principles laid down in the Supreme Court Judgment in Reliance Industries Vs Designated Authority which works out to Rs \*\*\* per Kg, marginally higher than the NIP determined at the time of the preliminary findings based on part verification of the domestic industry.

Injury margin calculations (in Rs/kg)			
Non-Injurious price	Landed value	Injury Margin	IM %
***	39.71	***	30-40
	37.45	***	40-50

#### I. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST.

118. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the domestic industry by the unfair trade practice of dumping and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, in the general interest of the country. The imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using subject goods and have some influence on their relative competitiveness, but would not affect fair competition or the availability of the product in the Indian market.

#### J. CONCLUSIONS:

119. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- ❖ The subject goods have entered the Indian market from the subject country at prices below their normal value.
- ❖ The dumping margin of the subject goods imported from the subject country are substantial and above de-minimis.
- ❖ The domestic industry suffers material injury;
- ❖ Injury has been caused by dumped imports of the subject goods from the subject country.

**K. RECOMMENDATIONS:**

120. Having initiated and conducted investigation into dumping, injury and causal links between dumping and injury to the domestic industry in terms of the Rules laid down and having established positive dumping margin against the subject countries, as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of definitive duty is required to offset dumping and injury to the domestic industry. Therefore, Authority considers it necessary and recommends imposition of definitive anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject countries in the form and manner described hereunder

121. Having regard to the lesser duty rule, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of the margin of dumping or of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. The margin of injury is lower than the margin of dumping. Accordingly, the Authority recommends that definitive anti-dumping duties be imposed in rupee terms on a fixed basis as requested from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government on all imports of the subject goods falling under chapter 87 of Custom Tariff Classification Act 1975, originating in or exported from China PR, to be collected definitively from the date of imposition of the provisional duty. The Anti-Dumping duty shall be the amount mentioned in column 9 of the annexed table.

122. Subject to the above, the provisional findings, notified vide notification dated 12<sup>th</sup> January, 2007 and subsequently modified vide corrigenda dated 21<sup>st</sup> February and 12<sup>th</sup> March 2007, are hereby confirmed

**L. FURTHER PROCEDURES**

123. An appeal against the orders of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

124. The Authority may review the need for continuation, modification or termination of the definitive measure as recommended herein from time to time as per the relevant provisions of the Act and public notices issued in this respect from time to time. No request for such a review shall be entertained by the Authority unless the same is filed by an interested party as per the time limit stipulated for this purpose.

R. GOPALAN, Designated Authority

**Duty table**

S.N o.	Sub-Head -ing/ Tariff Item	Description of Goods.	Description of Goods	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amt	Unit of Measur ement	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1	8708.70	Steel Wheels	Of nominal diameter 16"- 20"	China PR	China PR	M/s Zheng- xing Wheel Group Co.	M/s Zheng- xing Wheel Group Co.	14710	MT	INR
2	-do-	-do-	-do-	-do-	-do-	Any combination of producer / exporter (other than above)		16970	MT	INR
3	-do-	-do-	-do-	China PR	Any country other than China PR	Any	Any	16970	MT	INR
4	-do-	-do-	-do-	Any country other than China PR	China PR	Any	Any	16970	MT	INR